अध्याय 10

आचरण और विवेक

जो लोग झूठे देवताओं को समर्पित मन्दिरों में मूर्तियों के आगे चढ़ाए गये माँस को खाने के पक्ष में थे पौलुस के द्वारा उनका दो मोर्चों पर सामना किया गया: (1) ज्ञान के लिए चतुर परिभाषाएं और अपीलों ने उन बातों में कोई बदलाव नहीं किया जो आत्म-निर्धारित ज्ञानी लोग कर रहे थे। किसी भी उचित परिभाषा के द्वारा, मूर्ति के मंदिर में एक मूर्ति को चढ़ाया गया माँस खाना और परिचारक अनुष्ठानों में भाग लेना जो भोजन से जुड़े थे, एक झूठे देवता की उपासना करना था। इस प्रकार की वस्तुएं मसीह के प्रति आज्ञाकारिता के असंगत थीं। (2) यहाँ तक भी कि यदि मानसिक कारणों ने एक ज्ञानी को मूर्तिपूजा से दूर भी रखा होता, तो भी निर्बल मसीही उन भेदों को नहीं कर सके होंगे जो उन्होंने किए थे। या तो निर्बल उस पाखंड के कारण मसीह को त्याग देते थे जो उन्होंने मसीहियों में देखा था, या फिर वे उन भोजों में भाग लेते थे जिनके विषय में ज्ञानी दावा करते थे कि यह उनका अधिकार था परन्तु वे ऐसा ज्ञानियों के मानसिक कारणों के बिना करते थे। जो लोग ज्ञान का दावा करते थे सम्भवतः वे विश्वास में निर्बल लोगों के पाप करने का कारण बनते थे।

चाहे वे उचित भी रहे हों, तो भी ज्ञानियों को मूर्ती के मंदिर में मूर्ती को चढ़ाए गये माँस को खाने पर रोक लगानी थी। निर्बल भाइयों के प्राण अधिकारों के दावों से अधिक महत्वपूर्ण थे। प्रेरित ने स्वयं को अध्याय 9 में इसके उदाहरण के रूप में उपयोग किया था। जैसा कि उसने सुसमाचार की खातिर आर्थिक सहायता के अपने अधिकार का त्याग कर दिया था, उसी प्रकार ज्ञानी मसीहियों को भी मूर्ती कि उपासना में भाग लेने के अपने कथित अधिकार का त्याग अवश्य ही करना था। अपनी बात को स्थिर करने के बाद, पौलुस अपने पहले दावे की ओर लौटा, अर्थात, मानसिक कारणों के बावजूद भी ज्ञानी लोग मूर्तिपूजा के दोषी थे। 10 अध्याय उन विषयों पर वापस आता है जिनका परिचय अध्याय 8 में दिया गया था। जो लोग विश्वास में निर्बल थे उनके ऊपर इसके नकारात्मक प्रभाव के अलावा, मसीहियों ने जब भी मूर्तिपूजक अनुष्ठानों में भाग लिया तो उन्होंने पाप किया था।

"इस्राएल को स्मरण करें" (10:1-5)

[1]हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम इस बात से अनजान रहो कि हमारे सब बापदादे बादल के नीचे थे, और सब के सब समुद्र के बीच से पार हो गए; [2]और

सब ने बादल में और समुद्र में, मूसा का बपतिस्मा लिया; [3]और सब ने एक ही आत्मिक भोजन किया; [4]और सब ने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे जो उनके साथ-साथ चलती थी, और वह चट्टान मसीह था। [5]परन्तु परमेश्वर उनमें से बहुतों से प्रसन्न न हुआ, इसलिये वे जंगल में ढेर हो गए।

आयतें 1, 2. जो यहूदी रोमी संसार के व्यावसायिक केन्द्रों में तितर-बितर होकर रह रहे थे उनके इस विषय में विचार कि वे किस सीमा तक गैर-यहूदी समुदायों से मेल कर सकते थे एक दूसरे से भिन्न थे। कुछ लोगों ने अन्यजाति संस्कृति में दूसरों की अपेक्षा, समृद्ध व्यापारी और निपुण कारीगर बनने के द्वारा, अधिक व्यापक तौर पर अपना स्थान बनाया था। जैसे-जैसे समय बीता, इन यहूदी व्यापारियों और कारीगरों ने स्वयं को ऐसी प्रथाओं के अनुकूल बना लिया था जिसने उनके व्यवसाय को आगे बढ़ाया। पौलुस के कुरिन्थ पहुँचने से पहले, बहुत वर्षों से यहूदी उन व्यापारी समाजों का भाग थे जो यूनानी मंदिर में मिला करते थे। वे अपने साथी कारीगरों के साथ एकत्र होते और नियमों और लाभकारी आर्थिक पदों के लिए पैरवी किया करते थे। उन्होंने मूर्तिपूजक मंदिरों में सार्वजनिक भोजन कक्ष में मिलने की उनकी आवश्यकता को तर्कसंगत बनाया। सम्भवतः पौलुस ने व्यापारियों के समान खुले-मन के लोगों को सुसमाचार के प्रति दूसरों की अपेक्षा अधिक ग्रहणशील पाया; परन्तु जब उनमें से कुछ मसीही बन गए, तो भी उन्होंने इन सार्वजनिक भोजों में भाग लेना जारी रखा।

वे यहूदी मसीही जो एक मूर्ती के मन्दिर में भोजन करने के अधिकार का दावा करते थे उनका कलीसिया में सम्भवतः दो कारणों से आदर किया जाता था। पहला, यहूदी होने के कारण, वे मूसा की व्यवस्था के बारे में अन्यजाति मसीहियों की अपेक्षा अधिक ज्ञानी थे। दूसरा, समृद्ध व्यापारी होने के कारण, सम्भवतः वे वही लोग थे जिन्होंने कलीसिया के मिलने के स्थानों के लिए अपने घरों को अर्पित किया और अन्य तरीकों से भी मण्डली की आवश्यकताओं में योगदान दिया। जब पौलुस ने लिखा, **हमारे सब बापदादे बादल के नीचे थे और सब समुद्र के बीच से पार हो गए,** तो वह स्वयं को उन सजातीय यहूदियों के साथ जोड़ रहा था जो मसीही बन गए थे (देखें रोमियों 9:3)। बहुवचन सर्वनाम "हमारा" में सम्भवतः पौलुस और कुरिन्थ के यहूदी मसीही सम्मिलित थे। जो चित्र पौलुस ने 9:9 में व्यवस्था से दिया वह अन्यजातियों की तुलना में यहूदी विश्वासियों के लिए अधिक सम्मोहक रहा होगा।

कार्ल हॉलैडे ने यह टिप्पणी की: "कुछ कुरिन्थ वासी यह सोचते थे कि परमेश्वर के सामने उनकी स्थिति कुछ अपरिहार्य अधिकारों का आश्वासन था; उन्होंने यह भी कल्पना की थी कि इस स्थिति में वे अभेद्य थे।"[1] हालाँकि, हॉलैडे ने बताया कि प्राचीन इस्राएल उनकी अनुगृहित स्थिति में निहित प्रसन्नता के लिए अतिसंवेदनशील था, परन्तु वह यह स्पष्ट करने में विफल रहे कि प्रेरित पौलुस कुरिन्थ में यहूदी विश्वासियों को संबोधित कर रहा था। पौलुस के तर्क के

लिए यह महत्वपूर्ण है कि जब इस्राएल के लोगों ने लाल सागर को पार किया तब वे पानी से घिरे हुए थे (निर्गमन 14:21, 22)। जो बादल परमेश्वर के लोगों को मिस्रियों की सेना से अलग किए हुए था वह उनके ऊपर फैल गया; पानी की दीवारें दोनों ओर थीं।

उस क्षण जब लोगों ने मिस्र के दासत्व से सीनै के रेगिस्तान में स्वतंत्रता की ओर कूच किया तो यह इस्राएल के परमेश्वर के द्वारा चुने हुए होने का प्रतीक था। नया राष्ट्र फिरौन के दायित्व से परमेश्वर के दायित्व में कूच कर गया था, जिसका उसने अपने सेवक मूसा के द्वारा अभ्यास किया था। यह अनिश्चित है कि पौलुस इस्राएल की पाप के दासत्व से मसीह में स्वतंत्रता की तुलना में कितना अधिक आगे जाना चाहता था, परन्तु यह स्पष्ट है कि उसने लाल सागर को पार किए जाने को इस्राएल के लिए निर्णायक घटना के रूप में देखा। जिस प्रकार लाल सागर के पार किए जाने ने परमेश्वर के साथ इस्राएल की स्थिति को बदल दिया था, बपतिस्मा वह रेखा थी जिसने बचे हुओं को अविश्वासियों से अलग कर दिया था। परमेश्वर का सेवक मूसा व्यवस्था देने वाला बन गया था, और सभी इस्राएली उसके प्रति उत्तरदायी थे। इस्राएल के इतिहास की बड़ी घटनाओं को मसीह की शिक्षाओं के पूर्वाभास के रूप में देखते हुए, पौलुस ने कहा कि **सब ने बादल में और समुद्र में, मूसा का बपतिस्मा लिया।**

चार आयतों में पाँच बार, पौलुस ने इस बात पर बल दिया कि **सब ने** (*πάντες, पानटेस)* जो बात लाल सागर में हुई थी उसमें भाग लिया। ये घटनाएँ सजातीय इस्राएल के लिए परमेश्वर के द्वारा चुने हुए लोग होने के आश्वासन के समान बन गई थीं। पौलुस ने तर्क दिया कि, इसके बाद की घटनाओं ने इस्राएल को आत्म-संतुष्ट बना दिया था। कुरिन्थ में वे मसीही जो मूर्तिपूजकों के साथ भोजन कर रहे थे वे मसीह कि देह पर वही न्याय ले आने का जोखिम ले रहे थे जो इस्राएल पर जंगल में आया था।

आयत 3. कुरिन्थ के मसीही ये जानते थे कि परमेश्वर ने उनके जीवन में स्वयं को प्रकट करने के दो तरीकों को निर्धारित किया है। बपतिस्मा, विश्वास और पश्चाताप के आधार के सम्बन्ध सहित, परमेश्वर द्वारा पुत्र के बलिदान के कारण अनुग्रहकारी रीति से पापों की क्षमा देने का परिणाम सिद्ध हुआ। इस्राएल के लिए परमेश्वर के साथ जीवन का आरम्भ तब हुआ जब उन्होंने मूसा में बपतिस्मा लिया; कुरिन्थ में मसीहियों के लिए परमेश्वर के साथ जीवन का आरम्भ तब हुआ जब पश्चातापी विश्वासियों ने पापों की क्षमा हेतु पानी में डुबकी लगाई (प्रेरितों 2:38; 22:16)। परमेश्वर ने बपतिस्मा के माध्यम से उद्धार का कार्य किया।

बपतिस्मा के साथ ही, परमेश्वर ने कलीसिया को प्रभु भोज दिया था। इसके माध्यम से उसने मसीहियों को विश्वास के द्वारा जीने की शक्ति प्रदान की। जिस प्रकार इस्राएलियों ने जंगल में एक प्रकार के बपतिस्मा का अनुभव किया, उन्होंने उसी प्रकार एक तरह के प्रभु भोज का पालन भी किया। पौलुस ने लिखा, जो लोग लाल सागर से होकर आये थे **सब ने एक ही आत्मिक भोजन किया।**

इस्राएल को मन्ना के द्वारा (निर्गमन 16:4, 31) और उस पानी के द्वारा जो परमेश्वर ने चट्टानों से बहाया था (निर्गमन 17:6) जीवित रखा गया। इसी के समान, पौलुस ने सूचित किया कि, परमेश्वर अपनी कलीसिया को जैसे ही वे क्रूस और इसका क्या अर्थ है इसके ऊपर चिन्तन करते हैं, तो उन्हें आत्मिक रोटी और उस पानी के द्वारा विश्वासियों को मेल में बांधता है। यूहन्ना 6:31-51 में, यीशु ने जंगल में मन्ना का सन्दर्भ दिया। इस वाक्यांश में उसकी भाषा प्रभु भोज को ध्यान में रखने की ओर पुकारती है। मन्ना एक प्रकार से यीशु मसीह का एक चिन्ह था। यूहन्ना 6:35 में यीशु ने कहा, "जीवन की रोटी मैं हूँ: जो मेरे पास आता है वह कभी भूखा न होगा, और जो मुझ पर विश्वास करता है वह कभी प्यासा न होगा।"

आयत 4. 10:3, 4 में पौलुस ने तीन बार **आत्मिक** (πνευματικός, *न्युमाटीकोस)* शब्द का उपयोग किया। इस्राएल ने "आत्मिक भोजन" खाया और **आत्मिक ... जल पिया**, और जो चट्टान उनके साथ-साथ चलती थी वह "आत्मिक" थी। इस विशेषण के द्वारा प्रेरित का क्या अर्थ था यह स्पष्ट नहीं है। पतरस ने इसके "गैर-शाब्दिक" अर्थ के लिए इस शब्द का उपयोग किया। मसीहियों को एक "आत्मिक" घर में बनाया गया है और वे स्पष्ट तौर पर जानवरों को मारने की बजाय "आत्मिक" बलिदान चढ़ाते हैं (1 पतरस 2:5)।

पौलुस ने 1 कुरिन्थियों में अपनी सभी पत्रियों को मिलाकर भी सबसे अधिक बातों को "आत्मिक" के रूप में निर्धारित किया। उसने नगर में अपनी शिक्षाओं और सेवाओं के साथ (9:11), लोगों के "आत्मिक" होने के विषय में बात की (2:15)। कुरिन्थियों के पास "आत्मिक" वरदान थे (12:1; 14:1), और वे आने वाले युग में "आत्मिक" देहों को प्राप्त करने की आशा में थे (15:44, 46)। प्रत्यक्ष तौर पर, प्रेरित ने किसी वस्तु के "आत्मिक" होने को तब समझा जब उसने परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा किया। जंगल में भोजन, पानी और जो चट्टान इस्राएलियों के साथ-साथ चलती थी वे साधारण प्रकार की नहीं थीं। जिस प्रकार उन्हें दिया गया और उन्होंने जिस उद्देश्य को पूरा किया ये सब एक ईश्वरीय योजना में सटीक बैठते हैं। हालाँकि, कुछ समयों पर पौलुस "आत्मिक" शब्द का उपयोग "गैर-शाब्दिक" रूप से करता हुआ प्रतीत होता है, जिस प्रकार पतरस ने इसका उपयोग किया था। 15:39-50 में जिस आत्मिक देह पर चर्चा की गई है, वह गैर शाब्दिक है, जो "माँस और लहू" नहीं है (15:50)। जो आत्मिक चट्टान जंगल में इस्राएल के साथ-साथ चलती थी वह शाब्दिक नहीं थी।

यदि पौलुस "आत्मिक भोजन" और "आत्मिक जल" के साथ रुक जाता, तो हम बिना रुके इसे आगे पढ़ सकते थे; परन्तु उसने आगे कहा, **क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे जो उनके साथ-साथ चलती थी, और वह चट्टान मसीह था**। इस कथन में, उसने बाइबल के अनुवाद के अस्वाभाविक तरीके का उपयोग किया। क्या पौलुस पुराने नियम का दृष्टान्तिक अनुवाद कर रहा था, या सम्भवतः सांकेतिक रूप से? पुराना नियम ऐसी किसी चट्टान के विषय में नहीं बताता जो जंगल में इस्राएल के साथ-साथ चलती थी। पौलुस के दावे का स्त्रोत

क्या था, और उसने यह क्यों कहा कि "वह चट्टान मसीह था"?

डेविड ई. गारलैंड ने चट्टान के चित्रण को इस्राएल के लिए परमेश्वर के उपाय की स्थिरता के साथ जोड़ते हुए, कुछ सम्भावनाओं को सूचीबद्ध किया।[2] उनकी यात्रा के आरम्भ में परमेश्वर ने चट्टान से पानी निकाला और इसके अन्त में एक बार फिर ऐसा किया (निर्गमन 17:6; गिनती 20:8)। परमेश्वर अपने लोगों के साथ बना रहा, और इसके बीच के सभी वर्षों में, उनकी आवश्यकताएं पूरा करता रहा। पौलुस ने सम्भवतः यह तर्क दिया है कि परमेश्वर एक रूपक चट्टान (व्यवस्थाविवरण 32:4) था जो उन चालीस वर्षों के दौरान लोगों के लिए साथ-साथ रहा और उनकी आवश्यकताओं को पूरा किया। पौलुस और अन्य नए नियम के मसीहियों ने भी यही समझा कि यीशु ईश्वरीय है। जो कुछ परमेश्वर ने पुराने नियम में किया उसमें मसीह भी कार्य में सम्मिलित था। यूहन्ना ने अपने सुसमाचार के वर्णन का आरम्भ ईश्वरीय यीशु का परमेश्वर के साथ उत्पत्ति के समय होने का निर्धारण करने के साथ किया (यूहन्ना 1:1)। यदि परमेश्वर को उस चट्टान के रूप में देखा जाता है जो इस्राएल के साथ-साथ चली, तो यीशु - परमेश्वर होने के कारण - उसी चट्टान के समान है जो जंगल में इस्राएल के साथ - साथ चली। पौलुस के उपसंहार उस से आए जो वह पुराने नियम के वर्णन और यीशु के व्यक्तित्व से जानता था।

आयत 5. इस्राएल के लोगों को परमेश्वर की ओर से अथाह आशीषें मिलीं। उसने उनका चुनाव उसके लोग होने के लिए किया; लाल सागर में उन्होंने एक प्रकार के बपतिस्मा का अनुभव किया। परमेश्वर ने उन्हें आत्मिक भोजन और जल उपलब्ध करवाया, फिर भी वे उसकी ओर से फिर गए। इसी कारण उनके ऊपर विनाश आ पड़ा: **इसलिये वे जंगल में ढेर हो गए।** मूर्तिपूजा और इस्राएल के दंड को कुरिन्थियों के लिए एक चेतावनी के रूप में उपयोग किया गया। जिन मसीहियों ने अन्यजातियों के अनुष्ठानों में भाग लेकर स्वयं को जोखिम में डाला था उन्हें परमेश्वर से इस प्रकार उखाड़ फेंका जायेगा जैसे इस्राएल के साथ हुआ था। इस सन्दर्भ में इस्राएल एक मुख्य उदाहरण का कार्य करता है।

न तो मूर्तिपूजा और न ही कोई अन्य पाप असाधारण परिस्थितियों का दावा करने के द्वारा क्षमा किया जाएगा। एक चोर, एक व्यभिचारी, या एक झूठा यह निवेदन कर सकता है कि उसके विषय में पाप समझने योग्य था। कोई भी कम करने वाला विचार - चाहे वह ज्ञान, प्रेम, या आवश्यकता हो - वह किसी पापमयी कार्य को स्वीकार्य नहीं बना सकता। पौलुस यह दिखा रहा था कि, जब इस्राएली जंगल में मूर्तिपूजा की ओर फिरे तो वे परमेश्वर के विरोध में उन मसीहियों से अधिक बलवा करने वाले नहीं थे जिन्होंने एक मूर्ती के मंदिर में खाया था। कोई भी औचित्य या शिक्षा का दावा इस मूर्तिपूजक आचरण को एक समान रुचियों के अन्य लोगों के साथ बांटे गए निर्दोष भोजन में परिवर्तित नहीं कर सकता था।

"हमारे लिए उदाहरण" (10:6-13)

6ये बातें हमारे लिये दृष्टान्त ठहरीं, कि जैसे उन्होंने लालच किया, वैसे हम बुरी वस्तुओं का लालच न करें; 7और न तुम मूर्तिपूजक बनो, जैसे कि उनमें से कितने बन गए थे, जैसा लिखा है, "लोग खाने-पीने बैठे, और खेलने-कूदने उठे।" 8और न हम व्यभिचार करें, जैसा उनमें से कितनों ने किया; और एक दिन में तेईस हज़ार मर गये। 9और न हम प्रभु को परखें, जैसा उनमें से कितनों ने किया, और साँपों के द्वारा नष्ट किए गए। 10और न तुम कुड़कुड़ाओ, जिस रीति से उनमें से कितने कुड़कुड़ाए और नष्ट करनेवाले के द्वारा नष्ट किए गए। 11परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ीं, दृष्टान्त की रीति पर थीं; और वे हमारी चेतावनी के लिये जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गईं हैं। 12इसलिये जो समझता है, "मैं स्थिर हूँ," वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े। 13तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परमेश्वर सच्चा और वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको।

प्रेरित ने इस्राएल के मूर्तिपूजा में पतन की कहानी का वर्णन एक कारण से किया था। उसने अपने पाठकों को दो बार ये बताया कि भूतकाल की घटनाओं में शिक्षा का एक मूल्य था; उन्होंने निर्देशात्मक उदाहरण प्रस्तुत किए (10:6, 11)। एक विभाजित कलीसिया की अन्तर्धारा ने स्वयं को पौलुस की मूर्तिपूजा की चेतावनियों में उस प्रकार प्रकट किया जैसे इसने अन्य मामलों में किया था। कुछ लोगों को पौलुस पसन्द था और अन्य लोगों की पसन्द अपुल्लोस था ये अन्य स्तरों पर मनों को विभाजित करता है। कुरिन्थियों में से कुछ लोग विशाल धार्मिक दृश्य में गूढ़ समीक्षक और भागीदार थे। धन, राजनैतिक शक्ति और शिक्षा में उनके पास अलग-अलग परिमाण थे। उनमें से अधिकतर सजातीय यहूदी थे। अधिक नम्र वंश के अन्यजाति लोग जंगल में इस्राएल की यात्रा के विषय में शायद थोड़ा सा ही जानते थे। कुरिन्थ में कलीसिया की अगुवाई यहूदी हाथों में थी। यहूदियों के रूप में उन्होंने स्वयं को नगर के धार्मिक वातावरण में ढाल लिया था। उन्होंने कल्पना की और सोचा कि मसीही बनना उनके जीवन में उनके नगर के देवताओं और मन्दिरों से उनकी पारस्परिक क्रिया में आवश्यक तौर पर कोई बदलाव नहीं करेगा।

आयत 6. इस्राएल की मूर्तिपूजा कुरिन्थ के मसीहियों के लिए एक पाठ से अधिक था। इस्राएलियों का पाप और इसके बाद उनकी पीड़ा ने आने वाली पीढ़ियों के लिए एक उदाहरण का कार्य किया। इसने उस प्रकार के मूर्तिपूजक तरीकों के अधीन न होने के लिए एक चेतावनी के रूप में कार्य किया।

प्रेरित ने लिखा, **ये बातें हमारे लिए दृष्टान्त ठहरीं।** जंगल में परमेश्वर के लोगों के व्यवहार और कुरिन्थ की कलीसिया का व्यवहार, हालाँकि ये एकदम समानान्तर तो नहीं, तो भी उनमें काफी समानताएं थीं जिन्हें प्रेरित इस्राएलियों

के अनुभव को एक चेतावनी के रूप में प्रयोग कर सकता था। **बुरी वस्तुओं** में उनकी मूर्तिपूजा और परमेश्वर के प्रति उनकी अनाज्ञाकारिता का परिणाम सम्मिलित था।

आयतें 7, 8. पौलुस ने मसीहियों को बपतिस्मा और प्रभु भोज के महत्व को देखने में सहायता करने के लिए पुराने नियम की घटनाओं का उपयोग किया।[3] हालाँकि, उसकी तत्काल चिंता, उसके पाठकों को मूर्तिपूजा के खतरों के विषय में समझाना था (देखें 8:1)। उसने विनती करके कहा कि **न तुम मूर्तिपूजक बनो, जैसे कि उनमें से कितने बन गए थे।** प्रेरित ने εἰδωλολάτραι *(आइडोलोलात्राई)* "मूर्तिपूजक" स्वयं और εἰδωλόθυτον (*आइडोलोथूटोन;* 10:19), या ἱερόθυτον (*हिएरोथूटोन;* 10:28), मूर्तियों को अर्पित की गई वस्तुओं में भेद किया। पहली परिभाषा, चाहे वह इस्राएलियों या कुरिन्थियों की पहचान हो, इसका अर्थ था वे जो एक मूर्ती की उपासना करते थे। अन्य दो शब्दों ने देवताओं को बलिदान किए गए पशुओं के माँस का उल्लेख किया। इन परिभाषाओं ने यह संकेत नहीं किया कि माँस उस धार्मिक अनुष्ठान के कारण दूषित हो गया था जिसमें उसका उपयोग किया गया था। माँस के साथ जो किया जाता था ये उसकी ओर संकेत करते हैं।

इस्राएलियों ने मूर्तिपूजा के लिए कोई ढोंग नहीं किया था। **वे लोग खाने-पीने बैठे, और खेलने-कूदने उठे।** इसके विपरीत, कुरिन्थियों ने मूर्तिपूजा और उन प्रक्रियाओं के बीच में चतुराई से भेद करने का प्रयास किया जिनके द्वारा वे मूर्तियों का आदर किया करते थे। उन्होंने यह तर्क दिया कि केवल वे लोग जो मूर्तियों में विश्वास करते थे वे ही मूर्तिपूजक हो सकते थे। इसके परिणाम स्वरूप, उन्होंने परिवर्तन की किसी भी आवश्यकता का इनकार किया। पश्चाताप उनसे परे था क्योंकि उन्होंने यह मानने से इनकार कर दिया था कि उन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध कोई अपराध किया है या उन्हें उनके जीवन से पाप को उखाड़ने के कोई आवश्यकता थी।

पौलुस जिस वाक्यांश निर्गमन 32:6, की संक्षिप्त व्याख्या कर रहा था, उसने लोगों की मूर्तिपूजा के विषय में बात की और कहा वे "लोग खाने-पीने बैठे, और खेलने-कूदने उठे।" चाहे देवता मिस्री, कनानी, या यूनानी रहे हों मूर्तिपूजा और अनैतिकता एक साथ चलती थी। मोआबी, अम्मोनी, एमोरी, और अन्य कनानियों ने अपने देवताओं को विभिन्न नाम दिए; परन्तु नाम के अलावा, प्रजनन पन्थ मूल रूप से एक ही थे। इस्राएल के आसपास के लोगों के देवताओं का सम्बन्ध प्रकृति से था। अन्यजाति ईश्वरों के लिए केवल यह नहीं कहा जाता था कि वे वर्षा के गिरने और बिजली चमकने कारण थे; उन्हें स्वयं ही वर्षा और बिजली समझा जाता था। फसलों की कटाई और मवेशियों और पशुओं के प्रजनन लोगों के देवताओं में विश्वास के साथ बुने हुए थे। अनैतिकता और मूर्तिपूजा यूनानी नगर कुरिन्थ में एक साथ चलते थे, जैसे वे मिस्र और कनान में थे। यहाँ तक कि तब भी जब मूसा पहाड़ पर व्यवस्था को ग्रहण कर रहा था जो इस्राएल को पवित्र लोगों के रूप में चिन्हित करने वाली थी, तो भी लोग मूर्तियों की

उपासना में लीन थे जिसमें अनैतिकता भी सम्मिलित थी।

प्रेरित उस समय बहुत कम विषय बदल रहा था जब वह इस्राएल के मिस्र से बच निकलने के ठीक बाद सीनै पर मूर्तिपूजा के दृश्य से, उनके जंगल में भटकने के अन्त में मोआब में मूर्तिपूजा के दृश्य तक गया (गिन. 25)। इस अवसर पर उनकी मूर्तिपूजा और अनैतिकता के कारण, परमेश्वर ने एक विपत्ति भेजी थी। इस्राएल में **एक दिन में** लगभग 23,000[4] लोग नाश हो गए।

आयत 9. इस्राएलियों ने **प्रभु को परखने** के लिए जंगल में चाहे जो कुछ किया था, कुरिन्थ के लोग भी प्रभु यीशु को उसी प्रकार से परख रहे थे। जब मसीहियों ने एक मूर्ती के मन्दिर में माँस खाया, तो वे यीशु की परीक्षा कर रहे थे। जंगल में परखने वाले का सामना करते हुए, यीशु ने व्यवस्थाविवरण 6:16: का उल्लेख किया "तू अपने प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न करना" (मत्ती 4:7)। हनन्याह और सफ़िरा इसलिए मर गए क्योंकि "वे प्रभु के आत्मा की परीक्षा करने में एक साथ सहमत थे" (प्रेरितों 5:9)।

पौलुस ने इस्राएल के इतिहास से बलवे की कई घटनाओं का सन्दर्भ दिया। सीनै पर्वत पर लोग "उठकर खेलने लगे" (निर्गमन 32:6)। पोर के बाल देवता के स्थान पर, उन्होंने "अनैतिक रूप से कार्य किया ... और एक दिन में तेईस हज़ार मर गए" (1 कुरि. 10:8; देखें गिनती 25:9)। इस्राएल के विश्वास की कमी ने कई अवसरों पर बलवे के कार्यों की ओर नेतृत्व किया। इन सभी में मूर्तिपूजा सम्मिलित नहीं थी। कनान के राजा अराद की पराजय के बाद लोगों ने शिकायत की और **साँपों के द्वारा नष्ट किए गए** (देखें गिनती 21:6)। पौलुस ने स्पष्ट रूप से कुरिन्थ में अपने पाठकों से हृदय से परमेश्वर की आज्ञा पालन करने की विनती की। उसकी परीक्षा लेना विपत्ति को न्योता देना था।

आयत 10. कुरिन्थियों को केवल परमेश्वर और परमेश्वर की सेवा ही नहीं करनी थी, बल्कि उन्हें उसके विरुद्ध कुड़कुड़ाना भी नहीं था। "कुड़कुड़ाना" (γογγύζω, *गोंगुज़ो)* शब्द का 1 कुरिन्थियों में कहीं उपयोग नहीं हुआ। जंगल में अन्तहीन कुड़कुड़ाहट ने इस्राएल स्वभाव दिखाया (निर्गमन 15:24; गिन. 14:36; 16:41)। क्या शिकायत करना ऐसी भयानक आदत थी? रेगिस्तान में इस्राएल के सभी पापों में, पापों की सूची पर बात करने के लिए यह कम प्राथमिकता वाली प्रतीत होगी। सम्भवतः पौलुस ने इसका वर्णन इस कारण किया क्योंकि जो लोग मूर्ती के मन्दिरों में भोजन खाना चाहते थे वे उसके विरुद्ध कुड़कुड़ाए थे। एक अन्य सम्भावना ये भी है कि उसने कुरिन्थ में कलीसिया में विभाजन सम्बन्धित सामान्य कुड़कुड़ाहट का समाचार भी सुना था।

जो लोग जंगल में कुड़कुड़ाए थे, और शायद कुरिन्थ में भी जिन्होंने यही किया था, उन्हें चेतावनी दी गयी थी कि वे **नष्ट करने वाले के द्वारा नष्ट किए जायेंगे।** प्रेरित ने आगे "नष्ट करनेवाले" की पहचान नहीं बताई। मिस्र पर 10वीं विपत्ति के गिरने से पहले, परमेश्वर ने इस्राएल को उनके घरों के दरवाजों की चौखटों और अलंगो पर लहू लगाने के लिए कहा था। जब परमेश्वर ने मिस्रियों को मारा, तो उसने लहू से चिन्हित घरों में "नष्ट करने वाले" को जाने नहीं दिया

(निर्गमन 12:23)। "नष्ट करने वाला" मिस्र के ऊपर परमेश्वर के न्याय का मानवीकरण था। भजन संहिता 78:49 में, मिस्र के ऊपर परमेश्वर के न्याय की क्रोधाग्नि की तुलना "नष्ट करने वाले स्वर्गदूतों की एक टोली" से की गई है। पौलुस ने "नष्ट करने वाले" को परमेश्वर से अलग किसी तत्त्व के रूप में नहीं देखा; यह परिभाषा एक बार फिर परमेश्वर के धर्मी प्रकोप के मानवीय रूप में दिखाई पड़ती है, जिसे वह मूर्तिपूजा, अनैतिकता, कुड़कुड़ाहट, और बलवे के विरोध में उंडेलने के लिए तैयार था।

आयत 11. पुराना नियम पहली बाइबल था, और यहूदी विश्वासियों के द्वारा अन्यजाति मसीहियों को इससे परिचित कराया गया। जब प्रेरित ने पुराने नियम में दर्ज की गई उन घटनाओं की ओर दूसरी बार संकेत किया कि वे मसीहियों के लिए **एक दृष्टान्त की रीति पर थीं,** तो उसने यहूदी और अन्यजाति पाठकों से प्रतिरोध की आशा नहीं की थी। उसने कहा ये घटनाएँ मसीही विश्वास और आचरण हेतु चेतावनी के रूप में दर्ज की गयी हैं (देखें 10:6)।

मसीह के आने तक, पुराना नियम रहस्य में छुपा हुआ था; परन्तु अब, **जगत के अन्तिम समय** में, कलीसिया परमेश्वर के प्रकाशन का सम्पूर्ण आनन्द ले सकती थी। यीशु और उसके प्रेरित पवित्रशास्त्र के अर्थ के विषय में शिक्षा लेकर आए थे। परमेश्वर की आशीषों की भरपूरी कुरिन्थियों से जुड़ी हुई थी। उन्होंने जिन आशीषों का आनंद लिया था, उसमें परमेश्वर के सभी उद्देश्यों को अनुभव किया गया था, और उन आशीषों के साथ बड़ी जिम्मेदारियाँ भी आईं थीं।

> मसीह के पुनरुत्थान और परमेश्वर के दाहिनी हाथ की ओर उसके वर्तमान राज्य के कारण, पौलुस यह दावा करता है कि मसीही मानव इतिहास के अन्तिम काल में रह रहे हैं, एक ऐसा काल जिसकी सीमाएं एक छोर पर मसीह के पुनरुत्थान और स्वर्ग में उठा लिए जाने और दूसरे छोर पर मसीही के दूसरे आगमन के द्वारा निर्धारित की गईं हैं। चूंकि मानवता के साथ परमेश्वर के सभी पहले व्यवहार, उसके सामान्य प्रकाशन और इसके साथ ही उसके चुने हुओं के द्वारा दिए गए प्रकाशन दोनों ने मसीह के द्वारा राज्य किए जाने वाले एक युग की विशेषताओं की ओर संकेत किया, पौलुस दावा करता है कि सभी प्रथम पवित्रशास्त्रों का एकमात्र लक्ष्य मसीह के युग में रहने वाले लोगों को निर्देश और शिक्षा देना था।[5]

आयत 12. जब पौलुस ने यह कहा, **इसलिये जो समझता है, 'मैं स्थिर हूँ, वह चौकस रहे ...** तो वह निस्संदेह विश्वासियों को सम्बोधित कर रहा था, यद्यपि सभी मसीही आत्म-निरीक्षण से लाभ ले सकते हैं, प्रेरित उपदेश के आरम्भ में अपने विचार का विस्तार कर रहा था: "ज्ञान घमण्ड उत्पन्न करता है, परन्तु प्रेम से उन्नति होती है" (8:1)। जो लोग यह मानते थे कि मूर्तियों के अस्तित्व के न होने के उनके ज्ञान ने उन्हें मूर्तिपूजक भोजों में संलिप्त होने के लिए सक्षम कर दिया था (8:4) उन्हें इस चेतावनी की आवश्यकता थी कि उनके लिए अनुग्रह से गिर जाने की सम्भावना थी (देखें गलातियों 5:4)। सम्भवतः उन्होंने

यह कल्पना की थी कि क्योंकि उन्होंने बपतिस्मा लिया था और नियमित तौर पर प्रभु भोज में भाग लेते थे, तो उनके पास परमेश्वर के साथ अच्छे सम्बन्ध और रक्षा और अनन्तकाल का आश्वासन था। इसके विपरीत, पौलुस ने कहा कि उन्हें यह स्मरण करने की आवश्यकता थी कि परमेश्वर से तुलनात्मक आशीष अनुभव करने के बाद भी इस्राएली "जंगल में ढेर हो गए थे" (1 कुरिन्थियों 10:5)। जो लोग मूर्तियों के मन्दिरों में रीति रिवाज़ों में भाग ले रहे थे वे अपने उद्धार को जोखिम में ड़ाल रहे थे।

कुरिंथ में आत्म-आश्वस्त ज्ञानी लोगों को इस्राएल के उदाहरण से मिली चेतावनी को गम्भीरता से लेने की आवश्यकता थी। उन्हें मूर्तिपूजा का त्यागना था, परन्तु उन्हें हताश नहीं होना था। वे उसी प्रकार की शारीरिक लालसाओं के विरुद्ध संघर्ष कर रहे थे जिन्होंने सदा से मानवता को परेशान किया है। अन्य लोग परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा अपने पाप से ऊपर उठ चुके थे, और अपना जीवन बदल चुके थे। कुरिन्थ के लोग भी यह कर सकते थे। पौलुस ने इस विषय में अपने ईश्वरीय अधिकार का दावा किया। परमेश्वर उसके द्वारा बात कर रहा था (2:13)।

आयत 13. इसके बाद मूसा ने इस्राएल को स्पष्ट तौर पर समझाया कि परमेश्वर जंगल में उनकी परीक्षा ले रहा था (व्यव. 8:2, 16)। इस प्रक्रिया में, कुछ लोग गिर गए थे और अन्य लोग दृढ़ हो गए थे। कुरिन्थियों को इस आश्वासन की आवश्यकता थी कि परमेश्वर की परीक्षा उनके सहने के परे नहीं जाएगी; वे विश्वास में दृढ़ता से उभर सकते थे। परीक्षा कठिन हो सकती है, परन्तु परमेश्वर अपने लोगों को बचाने में सक्षम है; वह **सच्चा** है। परमेश्वर ने कुरिन्थ में अपने लोगों से प्रेम किया, और वह इस बात को पुख्ता करेगा कि जो भी परीक्षा उनके ऊपर आएगी उनके पास उससे लड़ने की योग्यता हो; वह विश्वासयोग्य मसीहियों को इसके द्वारा व्याकुल नहीं होने देगा। बेन सिराक, जो कि एक यहूदी संत थे, जो मसीह के जन्म के लगभग दो सौ वर्ष पूर्व जीए, उन्होंने अवलोकन किया कि, "उस पुरुष पर कोई भी बुराई नहीं पड़ेगी जो यहोवा का भय मानता है, परन्तु परीक्षा में वह उसे बार-बार छुड़ाएगा।"[6]

"मूर्तिपूजा से बचे रहो" (10:14-22)

[14]इस कारण, हे मेरे प्रियो, मूर्तिपूजा से बचे रहो। [15]मैं बुद्धिमान जानकर तुम से कहता हूँ: जो मैं कहता हूँ, उसे तुम परखो। [16]वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं; क्या मसीह के लहू की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं? [17]इसलिये कि एक ही रोटी है तो हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं: क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं। [18]जो शरीर के भाव से इस्राएली हैं, उनको देखो: क्या बलिदानों के खानेवाले वेदी के सहभागी नहीं? [19]फिर मैं क्या कहता हूँ? क्या यह कि मूर्ति पर चढ़ाया गया बलिदान कुछ है, या मूर्ति कुछ है? [20]नहीं,

वरन् यह कि अन्यजाति जो बलिदान करते हैं; वे परमेश्वर के लिये नहीं परन्तु दुष्टात्माओं के लिये बलिदान करते हैं और मैं नहीं चाहता कि तुम दुष्टात्माओं के सहभागी हो। [21]तुम प्रभु के कटोरे और दुष्टात्माओं के कटोरे दोनों में से नहीं पी सकते। तुम प्रभु की मेज़ और दुष्टात्माओं की मेज़ दोनों के साझी नहीं हो सकते। [22]क्या हम प्रभु को क्रोध दिलाते हैं? क्या हम उस से शक्तिमान हैं?

10:1-3 में पौलुस के तर्कों के साथ उस विषय का समापन होता है जो 8:1 में आरम्भ हुआ था। वह मूर्ति पर चढ़ाए गए माँस से नहीं परन्तु मूर्तिपूजा से दूर भागने के लिए बलपुर्वक आग्रह कर रहा था (10:14)। जैसा कि पौलुस ने अपने पाठकों का सम्बोधन प्रायः "भाई" कहते हुए किया, 10:14 में उसने बहुत ही प्रेमी पद "मेरे प्रियो," का प्रयोग किया। इससे उसका अर्थ उन्हें डाँटने का नहीं था परन्तु अपने साथी मसीही लोगों को दिशा-निर्देशन देने का और चेतावनी देने का था।

आयत 14. कलीसिया के सम्मुख इस्राएल का उदाहरण था इसलिए कलीसिया में जो लोग थे उन्हें चाहिए था कि वे मूर्तिपूजा से दूर रहें। मूर्तियों पर चढ़ाए गए बलिदान को खाना, पाप से प्रेम करना था; फिर किसी मूर्ति के मन्दिर में इसे ख़ाना असहनीय था। मसीह के पीछे चलने वाले लोगों को चाहिए था कि वे ऐसी प्रत्येक चीज़ से अपना बचाव करें जो कि मूर्तिपूजा के समान हो (देखें 1 यूहन्ना 5:21)। पौलुस ने पूर्व में ही 1 कुरिन्थियों 8 में (और 10:23-30 में वह फिर से बल देने जा रहा था) इस आधारभूत सच्चाई पर बल दिया कि एक ही परमेश्वर है जो कि अस्तित्व में है। परमेश्वर यह माँग रखता है कि उसके लोग उसकी ही आराधना करें। किसी मूर्ति की किसी भी प्रकार से सेवा करने का अर्थ था परमेश्वर से मुँह मोड़ लेना।

इस कारण एक मज़बूत समुच्चयबोधक अव्यय का अनुवाद करता है। यह इस बात की ओर संकेत देता है कि पौलुस अपने द्वारा दिए गए तर्क के आधार पर यह निष्कर्ष दे रहा था। इस शब्द का अधिक सही अर्थ "किसी भी प्रकार से" (διόπερ, *डायोपर)* पद्यांश के द्वारा पाया जा सकता है। कुरिन्थ में ज्ञानी लोगों को यह चहिए था कि वे अपने प्रभाव के सन्दर्भ में अपनी कुछ क्रियाओं का मूल्यांकन करें। मूर्तिपूजा के सम्बन्ध में पौलुस का न्याय यहाँ पर प्रस्तुत किया गया है: **हे मेरे प्रियो, मूर्तिपूजा से बचे रहो।** जंगल में भटकना हो अथवा कनान के उपजाऊ संप्रदायों की बात हो, इस्राएल के लिए समस्या का एक निरन्तर स्त्रोत मूर्तियाँ थीं। परमेश्वर कभी भी अपनी महिमा मूर्ति के साथ नहीं बाँटता। मूर्ति के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जा सकता। मूर्तियाँ अपने स्थल पर निर्जीव ही पड़ी रहती हैं। इसके विरोध में भजन का लेखक लिखता है, "जो कुछ यहोवा ने चाहा उसे उसने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और सब गहरे स्थानों में किया है" (भजन संहिता 135:6)। पौलुस के पाठकों के लिए प्रथम प्राथमिकता मूर्तिपूजा से बचे रहना था।

आयत 15. एक बुद्धिमान शिक्षक के रुप में पौलुस ने अपने पाठकों को स्वयं

के लिए इन विषयों पर विचार करने के लिए कहा। **जो मैं कहता हूँ, उसे तुम परखो,** ऐसा कहते हुए उसने उन्हें चुनौती दी। प्रेरित ने कहा कि कुरिन्थ के लोग परख करने वाले लोग हैं परन्तु फिर भी पौलुस के द्वारा चुने गए शब्दों में व्यंग्य की एक झलक देखने को मिलती है। उसने उन्हें **बुद्धिमान** (φρόνιμοι, *फ्रोनिमोई,* "समझदार लोग"; NRSV; ESV) कहा। यह शब्द उसके पत्र में चार बार ही आता है।[7] प्रत्येक मामले में इस शब्द का प्रयोग प्रेरित ने कुछ व्यंग्य के साथ किया। स्वयं को बुद्धिमान घोषित करना सदैव समझदारी नहीं कहलाता। अधिक सामान्यता के साथ अनुवादित शब्द "बुद्धिमान" (σοφός, *सोफ़ोस)* उसकी पत्रियों में पन्द्रह बार (1 कुरिन्थियों में नौ बार) पाया गया, जो कि कभी सकारात्मक रुप में था तो कभी नकारात्मक रुप में था।

पौलुस ने यह भरोसा रखा कि जब उसका पत्र कुरिन्थ की कलीसिया के सम्मुख पढ़ा गया तब उसके पाठकों ने परख का प्रयोग किया। वहाँ प्रत्येक मसीही व्यक्ति मन्दिर की मूर्तियों के बलिदान के द्वारा आकर्षित नहीं किया गया। सम्भव है कि दरिद्र श्रमिक अथवा गुलाम इन बलिदानों में से परोसते थे, परन्तु वे लोग मन्दिर के भोजन कक्ष में न तो बैठते थे और न ही अन्यजाति रीतियों में शामिल होते थे। यह समृद्ध लोगों की प्रथा थी। कुरिन्थ में धनवान और ज़रुरतमन्द व्यक्ति के मध्य सामाजिक विभाजन को अनदेखा नहीं किया गया। सभा के अत्यन्त समृद्ध सदस्य सम्भावित रुप से यहूदी पृष्ठभूमि के व्यापारी लोग थे जैसा कि (10:1) में "हमारे सब बापदादे" के प्रति पौलुस का सन्दर्भ संकेत देता है।

आयत 16. प्रेरित फिर से मूर्तियों के लिए पर्वों में प्रतिभागी होने की चर्चा पर लौट कर आता है जो कि अध्याय 8 में आरम्भ हुई थी। उसने कहा कि किसी मूर्ति को चढ़ाए गए बलिदान में से ख़ाने से परमेश्वर के प्रति किसी प्रकार का अपराध नहीं दिखाता (देखें 8:8; 10:25); परन्तु इस बलिदान को किसी देवता को चढ़ाई गई प्रार्थना और आदर के साथ उसके मन्दिर में खाया जाए तो यह उस देवता की आराधना करने के समान है। कुछ मसीही लोगों ने यह महसूस करते हुए कि मूर्तियाँ कुछ भी नहीं है, यह निर्णय लिया कि अगर वे किसी सम्प्रदाय के भोज में भाग लेते हैं तो इससे कोई असर नहीं पड़ता। पौलुस ने यह बल दिया कि किसी भी अन्यजाति रीतियों में किसी भी प्रकार से शामिल होना अनदेखा नहीं किया जा सकता। उसने उनका ध्यान उस मेज़ की ओर खींचा जिसमें मसीही लोग प्रभु के भोज में भाग लेते हैं। **धन्यवाद के कटोरे** में से भाग लेना, **मसीह के लहू में** सहभागिता था और रोटी को तोड़ना, उसकी देह को याद करते हुए उसमें सहभागिता दिखाता था (देखें 11:24, 25)।

ऊपरी तौर से **सहभागिता** ("भागीदार होना"; NIV) से, पौलुस का अर्थ था कि मसीही लोगों ने (1) उन आशिषों में भाग लिया है जो कि मसीह ने उन्हें दीं, (2) उसके ईश्वरत्व में विश्वास किया और क्रूस पर उसकी मृत्यु के प्रभाव में विश्वास किया, और (3) देह में भाइयों और बहनों के साथ एक सामान्य अंगीकार को प्रमाणित किया। जैसा कि ये सब सच था, क्या किसी मूर्ति के

मन्दिर की मेज़ में भाग लेना अर्थ नहीं रखता क्योंकि यह मात्र खाने से कुछ और अधिक को भी शामिल करता था? यह आश्चर्य की बात नहीं कि पौलुस ने किसी मूर्ति के मन्दिर में खाने के विरोध में इस प्रकार के मज़बूत कथन कहे (8:10-13)!

रोटी के सम्मुख प्याले के विषय में पौलुस के विवरण के साथ क्या किसी महत्व को जोड़ा जाना चाहिए? उपयुक्त रुप से नहीं, परन्तु यह सम्भव है कि पौलुस प्राथमिक रुप से पापों की क्षमा के लिए मसीह के लहू बहाए जाने के विषय में सोच रहा हो। लहू का चित्रण बहुत ही प्रबल है और पशु के बलिदान का विचार सम्भवतः प्रेरित के मन में टूटी हुई देह के विचार से पूर्व प्याले को लाया। प्रभु भोज पर पौलुस की टिप्पणियाँ 11:23-26 में, मत्ती 26:26-35 अथवा मरकुस 14:17-25 की तुलना में लूका 22:14-20 में दिए गए विवरण के प्रति अत्यन्त निकट हैं। प्रभु भोज की व्यवस्था पर लूका के रिकॉर्ड में यीशु ने पहले के प्याले के विषय में कहा (लूका 22:17-19)। अब भी, प्रेरित इस रीति को संपूर्ण घटना के रुप में देखता है; जिस क्रम में उसने रोटी और प्याले के विषय में कहा वह सम्भवतः महत्वहीन है।

आयत 17. प्रभु की मेज़ में सहभागिता से विश्वासियों का समूह एक-दूसरे के साथ और प्रभु के साथ एकता में आ जाता है। पौलुस ने लिखा, **इसलिये कि एक ही रोटी है तो हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं: क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं।** तार्किक रुप से क्या इसी प्रकार से किसी मूर्ति की आराधना से सम्बन्धित पर्व, उसमें भागी होने वाले प्रतिभागियों को एक-दूसरे के साथ और उस मूर्ति के साथ एक नहीं करता?

आगे बढ़ते हुए पौलुस, कलीसिया के लिए प्रभु की मेज़ के महत्व की पूरी पहचान का प्रस्ताव रखता है। रोटी और प्याला स्मरण के लिए है परन्तु भोज का अर्थ इससे अधिक है। यह संगति करना है और एक-दूसरे के साथ सहभागिता है। एकत्रित कलीसिया रोटी तोड़ती है औ प्याले में से पीती है। प्रत्येक व्यक्ति, समान विश्वास रखने वाली देह के साथ जीवन की सहभागिता रखता है।

जब रोटी तोड़ना और प्याले में से पीना मात्र एक रीति अथवा प्रथा बन जाता है तब मसीही लोग अपने पहलौठे के अधिकार को अपने वश में रखने की वस्तु नहीं समझते। जो व्यक्ति प्रभु के दिन में कलीसिया के साथ एकत्रित नहीं हो पाते हैं वे एक दुखद आत्मिक हानि का अनुभव करते हैं। जैसा कि प्रभु मेज़, एकत्रित मसीही लोगों के लिए एक मुख्य अवसर है, इसका अर्थ मौलिक रुप से उस समय परिवर्तित कर दिया जाता है जब रोटी को देह से अलग करने के लिए तोड़ा जाता है।

आयत 18. NASB के अनुवादकों ने Ἰσραὴλ κατὰ σάρκα (*इस्राएल कटा सर्का,* अक्षरशः, "शरीर के अनुसार इस्राएली") को **इस्राएली** जाति के अर्थ में समझा। अगर यह सही है तो पौलुस शारीरिक, ऐतिहासिक इस्राएल और आत्मिक इस्राएल अर्थात मसीह की देह के मध्य एक अन्तर प्रस्तुत कर रहा था। जो लोग मूसा की व्यवस्था के अन्तर्गत जीवन जीते थे उनके पास याजक थे जो

कि **बलिदानों के खानेवाले** थे और इस कारण **वेदी के सहभागी थे**। आत्मिक इस्राएल, कुरिन्थ की कलीसिया और अन्य स्थान के पास इस प्रकार की कोई दिखाई देने वाली वेदी नहीं थी; परन्तु पौलुस ने मसीही लोगों से और विशेष रुप से उन लोगों से जो यहूदीवाद में जातिगत जड़े रखते थे, यह चाहा कि वे इसके विषय में कुछ सम्बन्ध देखें।

गार्लैंड ने 10:1-11 का उद्धरण किया और यह बनाए रखा कि पद्यांश, "शरीर के अनुसार" जंगल में इस्राएल के द्वारा मूर्तिपूजा के विषय में उत्तर देता है।[8] फिर भी, "वेदी में सहभागी होने वाले लोगों के लिए" लिया गया सन्दर्भ सामान्य रुप से यहूदीवाद पर लागू होता है न कि किसी विशेष रुप में जंगल के अनुभव पर लागू होता है। "शरीर के अनुसार" इस्राएल की आराधना और मूर्तिपूजक की आराधना इस विषय में समान थे: दोनों ही, जो कि वेदी पर सेवा करने वाले लोग हैं, वेदी के बलिदानों में सहभागी होते हैं। याजकों और आराधकों के द्वारा बलिदान को खाना किसी देवता को आदर देने के साथ विकट रुप से सम्बन्ध रखता था।

आयत 19. मूर्तियों के मन्दिरों में बलिदान करना और यरूशलेम के मन्दिर के बलिदान के मध्य तुलना करने के द्वारा पौलुस का अर्थ किसी अन्यजाति आराधना को किसी प्रकार का श्रेय देना नहीं था। उसने तुरन्त अपने पाठकों को स्मरण दिलाया कि वे यह न सोचें कि **मूर्ति पर चढ़ाया गया बलिदान कुछ है, या मूर्ति कुछ है** (देखें 8:4) है। हो सकता है कि अपने देवताओं की वेदियों पर जिस प्रकार की विधियों का प्रयोग मूर्तिपूजक याजक करते थे वे यहूदीवाद के याजकों के साथ बाहरी समानताएँ रखते हों, परन्तु परमेश्वर की जिस वास्तविकता की सेवा यहूदी लोग करते थे वह संपूर्ण रुप से भिन्न थी।

आयत 20. एक अर्थ में एक मूर्ति (8:4) कुछ भी नहीं है क्योंकि मूर्तियों में कोई सामर्थ नहीं है। फिर भी पौलुस ने यह प्रमाणित किया कि मूर्तिपूजा का कार्य शैतानी था। वह मूर्तियों को दुष्टात्माओं की समानता में नहीं मानता, इसके स्थान पर उसने मूर्तियों का मानवीयकरण किया कि ये, संसार में अन्य दुष्ट की ताकतों के समान, शैतान के द्वारा प्रेरित की गई हैं। उसने मीकायाह से अधिक कुछ नहीं किया, जिसने, परमेश्वर से आने वाली "एक झूठ बोलने वाली आत्मा" के विषय में भविष्यद्वक्ता सिदकियाह के शब्दों को और अन्य लोगों के शब्दों का कारण बताया (1 राजा 22:22, 23)। कम-से-कम, जैसा कि बहुत पहले अप्रमाणिक कार्य "बारुक" (लगभग 175 ईसा पूर्व) कहलाता है, मूर्तियों को दुष्टात्माओं के साथ जोड़ा गया है। बारुक के लेखक ने यह चेतावनी दी, "तुमने दुष्टात्माओं को, जो कि कोई ईश्वर नहीं हैं, बलिदान चढ़ाने के द्वारा अपने बनानेवाले को क्रोधित किया है।"[9] पौलुस के समय से पूर्व एक लम्बी परम्परा ने दुष्टात्माओं को झूठे ईश्वरों से जोड़ रखा था।

जो लोग मूर्तियों की आराधना करते थे वे उस मेज़ में सहभागी होते थे जहाँ पर दुष्टात्मा का सामर्थ राज्य करता था। यहाँ तक कि जब इस्राएली लोग मूर्तिपूजा करने लगे तब उन लोगों ने भी इस धारणा को ग्रहण कर लिया कि

इस्राएल के परमेश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है। "उन लोगों की मूरतें...मनुष्यों के हाथ की बनाई हुई हैं," इस प्रकार भजन संहिता के लेखक ने लिखा (भजन संहिता 115:4)। परमेश्वर के लोगों ने यह पहचान की कि मूर्तियाँ मात्र ऐसी हैं जो "न तो कुछ जानती हैं, न कुछ समझ रखती हैं, ... वह देख नहीं सकती और ... बूझ नहीं सकती ..." (यशायाह 44:18-20)। पौलुस ने इस बात पर विरोध किया कि वास्तविक अस्तित्व को अन्यजाति बलिदानों और पर्वों में आदर दिया जा रहा था जैसा कि मूर्तियाँ, परमेश्वर का विरोध करने के लिए बुराई की आत्मिक ताकतों के रुप में देखी जा सकती थी। बुराई के प्रति अन्यजाति समर्पण में चित्र जैसी वस्तुओं को देखा जा सकता था। गार्लेंड के अनुसार, "पौलुस का तर्क यह अनुमान लगाता है कि, परमेश्वर के साथ सीधी प्रतियोगिता करने में यदि मूल्य रखने वाली व्यवस्था को देखा जाए तो यह पाया जाएगा कि मूर्तियाँ किसी निर्जीव सामग्री से बनी हुई गूँगी वस्तु मात्र हैं फिर भी वे वास्तविकता का प्रतिनिधित्व कर रही थीं।"[10]

किसी मूर्ति को समर्पित एक मन्दिर में जब एक मसीही व्यक्ति बैठता है और मूर्ति को चढ़ाए हुए बलिदान में से खाता है और अपनी उपस्थिति के द्वारा उस मूर्ति का नाम अपने मुख से लेता है तो वह उस स्तर तक दुष्टात्मा के साथ एक साथी बन गया है। वह ऐसी दशा में है कि किसी प्रकार के मानसिक विचार अथवा सर्वोच्च ज्ञान में वह यह जान नहीं पा रहा था कि वह क्या कर रहा है। पौलुस के शब्द निश्चित थे। **अन्यजाति जो बलिदान करते हैं; वे परमेश्वर के लिये नहीं परन्तु दुष्टात्माओं के लिये करते हैं।** जो लोग इस प्रकार की अन्यजाति रीतियों में शामिल होते थे वे उनके साथ सहभागी बन जाते थे। साथ ही पौलुस ने कहा, **मैं नहीं चाहता कि तुम दुष्टात्माओं के सहभागी हो।** पौलुस के समान यूहन्ना ने अन्यजाति संसार के लोगों की ओर संकेत किया क्योंकि "बाकी मनुष्यों ने अपने हाथों के कामों से मन न फिराया, कि दुष्टात्माओं की, और सोने और चाँदी और पीतल और पत्थर और काठ की मूर्तियों की पूजा न करें जो न देख, न सुन, न चल सकती हैं" (प्रकाशितवाक्य 9:20)।

आयत 21. पौलुस ने बहुत तर्क-वितर्क करने के बाद एक निर्णय पर पहुँचने के लिए एक बुलाहट के साथ मामले को समाप्त किया: एक व्यक्ति को चाहिए कि वह प्रभु की मेज़ के द्वारा मसीह के साथ सहभागी होने और दुष्टात्माओं के द्वारा प्रेरित आराधना में सहभागी होने के बीच चुनाव करे। यह निर्णय स्पष्ट और निर्णायक था। किसी प्रकार का समझौता सम्भव नहीं था: **तुम प्रभु के कटोरे और दुष्टात्माओं के कटोरे दोनों में से नहीं पी सकते।**

"हमारे उन बापदादों" के प्रति पौलुस का निवेदन, जो कि बादल के नीचे थे (10:1) और जंगल में इस्राएल के उदाहरण (10:7-10) के प्रति निवेदन यह सुझाव देता है कि वे यहूदी जो कि मसीह की ओर परिवर्तित हो गए थे, उन्होंने एक आर्थिक आवश्यकता के रुप में मूर्तियों के मन्दिर में सहभागी होने को तार्किक रुप से सही ठहरा दिया था। यहूदी होते हुए उन्होंने यह माना कि मूर्तियाँ कुछ भी नहीं हैं। जब वे लोग मसीही बन गए तब भी कुछ परिवर्तित नहीं हुआ।

उन्होंने यह तर्क दिया कि जीविका के लिए यह आवश्यक है कि वे कुरिन्थ की व्यापारी श्रेणी में सक्रिय सहभागिता रखें। इसके बदले यह आवश्यक था कि वे मन्दिर के रात्रि-भोजों में उपस्थित रहें जहाँ पर व्यापारी संघ आपस में विचार-विमर्श करते थे और वहाँ पर लिए गए निर्णयों पर कार्य किया जाता था।

अगर यह सच है कि कुरिन्थ की कलीसिया ने विभिन्न श्रेणी के लोगों से अपनी संख्या जुटाई जो कि भिन्न-भिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के साथ थे तो उस स्थिति में निम्न स्तर के लोगों की तुलना में औपचारिक रुप में मूर्तियों को चढ़ाए गए बलिदान में से खाने के लिए उच्च श्रेणी के लोगों के पास उपयुक्त रुप से एक आर्थिक प्रेरणा होती। वेयन ए. मीक्स ने यह पाया,

> अगर "मूर्तियों को चढ़ाए गए बलिदान" पर रोक को लागू किया जाना था तो जो लोग "बलवान" थे और अधिक समृद्ध सदस्य थे उनका व्यवसाय और सामाजिक सम्बन्ध पर भारी प्रभाव पड़ता; इससे दरिद्र श्रेणी कम ही प्रभावित होती। इससे अधिक, दरिद्र लोग बलिदान में से इतना कम ही खाया करते थे कि उन्हें उसे किसी सामूहिक अवसर और परिस्थिति के साथ जोड़ने के प्रति झुकाव नहीं रखना पड़ता था।[11]

"अधिक समृद्ध" यहूदी जैसे कि क्रिसपुस (प्रेरितों के काम 18:8) और सोस्थिनेस (प्रेरितों के काम 18:17; 1 कुरिन्थियों 1:1) ने जब यहूदीवाद के कठोर अनुशासन के साथ तुलना की तब शायद ही ऐसा होगा कि मसीही सन्देश के कुछ पहलुओं में उपयुक्त रुप से उन्होंने एक उदारवादी ध्वनि पाई हो, परन्तु मूर्तियों की सेवा करने में उन्होंने पौलुस के पद के लिए उपयुक्त रुप से पाया कि वह अधिक कड़क था। तुलना के आधार पर "अधिक समृद्ध" अन्यजाति लोगों ने मन्दिर में किसी प्रकार के सम्बन्ध पर रोक लगाने के लिए कोई उपयुक्त बलपूर्वक निवेदन नहीं देखा।

आयत 22. सम्भवतः कुरिन्थ में प्रथम बार परिवर्तन पाए हुए लोगों को बपतिस्मा में मसीह को पहने हुए चार वर्ष बीत चुके थे (प्रेरितों के काम 18:8)।[12] अन्यजाति विश्वासी लोगों को भविष्यद्वाणी और उसके पूरे होने पर एक बल के साथ पुराना नियम की शिक्षा दी गई थी। कागज़ के बंडल की कमी और खर्चो को अथवा अन्य प्रकार की लेखन सामग्री को देखते हुए यह कहना असम्भव है कि अन्यजाति मसीही लोग इब्रानी धर्मशास्त्र में अथवा प्राचीन इस्राएल के विचार किए गए संसार से अच्छी प्रकार से जानकारी रखते थे। जिन लोगों की जातीय जड़ें यहूदीवाद में थी, दूसरी ओर, वे लोग इस बात से अच्छी प्रकार से परिचित होते जैसा कि इस प्रकार कहा गया **प्रभु को क्रोध दिलाना।**

इस आयत में अपने पाठकों के सम्मुख जो आलंकारिक प्रश्न पौलुस ने रखे उन प्रश्नों ने एक नकारात्मक उत्तर की माँग की। निश्चित रुप से हम "प्रभु को क्रोध नहीं दिलाना चाहते" (देखें व्यवस्था विवरण 32:16, 21); और **साथ ही हम उसके समान शक्तिमान नहीं हैं** (देखें अय्यूब 37:23; यहेजकेल 22:14)। संपूर्ण पुराना नियम में, मूर्तिपूजा ने परमेश्वर की जलन और क्रोध को भड़काया।

"उचित" और "लाभपूर्ण" (10:23-30)

[23]सब वस्तुएँ मेरे लिये उचित तो हैं, परन्तु सब लाभ की नहीं: सब वस्तुएँ मेरे लिये उचित तो हैं, परन्तु सब वस्तुओं से उन्नति नहीं। [24]कोई अपनी ही भलाई को नहीं, वरन् दूसरों की भलाई को ढूँढ़े। [25]जो कुछ कस्साइयों के यहाँ बिकता है, वह खाओ और विवेक के कारण कुछ न पूछो; [26]"क्योंकि पृथ्वी और उस की भरपूरी प्रभु की है।" [27]यदि अविश्वासियों में से कोई तुम्हें नेवता दे, और तुम जाना चाहो, तो जो कुछ तुम्हारे सामने रखा जाए वही खाओ; और विवेक के कारण कुछ न पूछो। [28]परन्तु यदि कोई तुम से कहे, "यह तो मूर्ति को बलि की हुई वस्तु है," तो उसी बतानेवाले के कारण और विवेक के कारण न खाओ। [29]मेरा मतलब तेरा विवेक नहीं, परन्तु उस दूसरे का। भला, मेरी स्वतंत्रता दूसरे के विचार से क्यों परखी जाए? [30]यदि मैं धन्यवाद करके साझी होता हूँ, तो जिस पर मैं धन्यवाद करता हूँ उसके कारण मेरी बदनामी क्यों होती है?

पौलुस ने यह स्थापित किया कि किसी मूर्ति को समर्पित मन्दिर में बलिदान में सहभागी होने का अर्थ था, मूर्तिपूजा करना और प्रभु को क्रोध दिलाना। उसने यह भी माना कि मात्र उस बलिदान में सहभागी होना पाप नहीं है परन्तु उस बलिदान की संपूर्ण व्यवस्था का भाग होना पाप है।

प्रेरित ने ऐसा इसलिए लिखा कि उसके पास इसका दूसरा कारण भी था। किसी कमज़ोर विश्वास के एक भाई के सम्मुख, किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा, किसी मूर्ति को चढ़ाए गए बलिदान में से लापरवाही से खाने से पड़ने वाला प्रभाव चिन्ता का कारण था।

आयत 23. इस आयत में मुख्य शब्द **उचित** (ἔξεστιν, *एग्ज़ेस्टिन)* है। मसीह ने अपने लोगों को अधिकार क्यों दिए हैं? एक स्वीकार्य मसीही व्यवहार की सीमाएँ क्या हैं? "सही" अथवा "गलत," के लेबल की एक साफ़ श्रेणी में प्रत्येक विषय को रखना आसान है परन्तु मसीही जीवन उससे कहीं अधिक जटिल है। किसी एक सन्दर्भ में दी गई विधि निर्दोष हो सकती है और किसी अन्य सन्दर्भ में दोष से भरी हुई हो सकती है। इसके लिए परिस्थितियाँ बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। मूर्तियों को चढ़ाए गए बलिदान में सहभागी होना भी इसी प्रकार का विषय है।

सब वस्तुएँ मेरे लिए उचित हैं, इस कथन का अर्थ यह **नहीं** है कि **सब वस्तुएँ लाभपूर्ण हैं**। जो मसीही व्यक्ति अपने भाइयों और बहनों से प्रेम करता है वह इस बात पर विचार करता है कि उसके काम किस प्रकार उन्हें प्रभावित करने जा रहे हैं। किसी प्रकार का एक व्यवहार निर्दोष हो सकता है परन्तु फिर भी यह किसी कमज़ोर विवेक के व्यक्ति को क्रोधित कर सकता है। मज़बूत मसीही लोग परमेश्वर के लोगों का निर्माण करना चाहते हैं। अतः जो व्यक्ति व्यवस्था का पालन करता है उसको कुछ अन्य प्रश्नों के उत्तरों पर निर्णय लेने की आवश्यकता है कि जैसा व्यवहार वह रखता है वह उचित है या अनुचित। व्यवस्थित होना आवश्यक रुप से किसी प्रकार के व्यवहार को उचित नहीं ठहराता।

मसीह की ओर परिवर्तित हुए कुछ ऐसे लोग, जिन्होंने अपनी पापमयी जीवन-शैली छोड़ दी थी, अब भी उन्हें यह सीखने की आवश्यकता थी कि अपने व्यवहार में किस प्रकार आगे बढ़ें। व्यभिचार और चोरी को पीछे छोड़ना ही पर्याप्त नहीं था (देखें 6:9-11)। यीशु ने अपने पीछे चलने वाले लोगों को जीने के उच्च स्तर के लिए बुलाया है। मुकद्दमे के आरम्भिक सन्दर्भों में पौलुस ने पूछा था, "अन्याय क्यों नहीं सहते? अपनी हानि क्यों नहीं सहते?" (6:7)। एक मसीही व्यक्ति जब अधिकारों के साथ चिपका हुआ होता है तो इससे यह प्रकट होता है कि उसमें प्रभु के द्वारा स्थापित किए गए उदाहरण को समझने की कमी है।

उचित अथवा अनुचित पर बहस करने के स्थान पर, प्रेरित ने अपने पड़ोसी की भलाई की ज़िम्मेदारी को लेकर ध्यान देने को कहा। एक विश्वासी के लिए सदैव (अथवा सम्भावित रुप से सदा के लिए) यह अच्छा नहीं होता कि वह स्वयं के अधिकारों पर पहले बल दे।

आयत 24. जब कभी मसीह की महिमा प्रश्न के घेरे में आई, जब कभी ऐसा रहा कि मसीही लोगों का व्यवहार अन्य लोगों को प्रभावित करने वाला हो सकता था तब पौलुस ने बलपूर्वक आग्रह किया, **कोई अपनी ही भलाई को नहीं ढूँढे।**[13] जब पौलुस ने ऐसा कहा कि विश्वासी लोग अपनी ही भलाई को न ढूँढे, तब उसने अपने पाठकों को स्वयं-सेवी आदतों से अलग होने के लिए छोड़ दिया। मसीही व्यक्ति की प्राथमिकता स्वयं के लाभ, आदर अथवा विशेष अधिकार के लिए नहीं होनी चाहिए। इसके स्थान पर उसे **अपने पड़ोसी** के लाभ, भलाई और आत्मिक विकास की खोज करनी चाहिए।

आयतें 25, 26. पौलुस के पत्रों के विभिन्न भागों ने कुरिन्थ में रहने वाले मसीही लोगों को भिन्न बलों के साथ सम्बोधित किया। संपूर्ण कलीसिया में विभाजन देखे जा सकते थे परन्तु कुछ लोगों को अन्य लोगों की तुलना में दल के प्रति अधिक झुकाव रखने के रुप देखा जा सकता था। प्रत्येक सदस्य अपनी समस्याओं के निवारण के लिए किसी सांसारिक मुकद्दमों की अदालत में नहीं जा रहे थे और न ही ऐसा था कि भाई लोग गौरवपूर्ण आत्मिक वरदानों के लिए सामान्य रुप से जोशीले नहीं थे। इसी प्रकार सब विश्वासी लोग, किसी मूर्ति के मन्दिर में बलिदान में सहभागी होने के अधिकार के बचाव में समान रुप से रुचि रखने वाले नहीं थे। उस विषय में सम्भवतः प्राथमिक रुप से पौलुस उन धनवान यहूदी शिल्पकारों और व्यापारियों का सामना करता जो की मसीही तो बन गए थे परन्तु अपने व्यावसायिक समूहों में सहभागिता को निरन्तर बनाए रखना चाहते थे। उनके व्यवहार के विषय में जिस प्रकार भी पौलुस को उनकी आलोचना करनी थी वह इतनी बुरी नहीं होती जितनी कि उन्होंने मसीह की ओर परिवर्तित होने से पूर्व अपने साथी यहूदियों से पाई। उन्होंने पौलुस से उसी प्रकार आपत्ति का सामना किया जैसा कि वे सभा में सदस्य होने के समय करते थे।

पौलुस के सम्मुख प्रस्तुत किया गया तर्क इस बात का प्रमाण है कि "एक मूर्ति कुछ भी नहीं है।" जैसा कि ये मसीही लोग जानते थे कि उन ईश्वरों का

अस्तित्व नहीं है, वे लोग जब मूर्तियों के मन्दिरों में पर्वों में भाग लेते थे तब स्वयं को मूर्तिपूजा के लिए दोषी नहीं मानते थे। पौलुस इस बात के प्रति सावधान था कि इस बात पर तर्क न करे कि एक यूनानी ईश्वर की वेदी पर चढ़ाया गया बलिदान एक ईश्वर का है। वह इस बात से सहमत था कि ईश्वर कुछ भी नहीं हैं। कोई जन ऐसी किसी चीज़ को आदर नहीं दे सकता जो है ही नहीं; न ही कोई जन किसी ऐसी चीज़ की स्तुति कर सकता है अथवा उससे निवेदन कर सकता है जो कि है ही नहीं। अतः अगर एक मसीही व्यक्ति बाज़ार जाए और किसी अन्यजाति वेदी पर बलिदान किए गए माँस को ख़रीदकर लाता है तो वह बिना किसी दोष के उसे खा सकता है। फिर भी किसी मूर्ति के *मन्दिर में* इसमें से नहीं खाया जाए। पौलुस ने कहा कि इस प्रकार का व्यवहार उन मसीही लोगों के विश्वास को कमज़ोर कर सकता है जो कि इस प्रकार के कठिन भेद में अन्तर न कर पाएँ अथवा अन्तर करने के इच्छुक न हों।

डाइसपोरा के अनेक यहूदियों की तुलना में मूर्तिपूजा को परिभाषित करने में प्रेरित अधिक कठोर था, परन्तु क्या वह अपने यहूदी जोड़ के लोगों की तुलना में अधिक उदारवादी था? **जो कुछ कस्साइयों के यहाँ बिकता है, वह खाओ और विवेक के कारण कुछ न पूछो** (10:25) और "... मूरतों पर बलि किए हुओं से दूर रहो" (प्रेरितों के काम 15:29) के बीच तनाव स्पष्ट रुप से देखा जा सकता है। फिर भी, यरूशलेम की समिति के द्वारा रोक का सन्दर्भ उस तनाव का निवारण करने में सहायता प्रदान करता है। अन्ताकिया में अगर अन्यजाति और यहूदी विश्वासी को एक कलीसिया के रुप में स्थान पाना था तो इसके लिए मेज़ की संगति आवश्यक थी। आरम्भिक दिनों में किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं थी (गलातियों 2:12); फिर भी यरूशलेम में कलीसिया से आने वाले लोगों ने मूर्तियों को चढ़ा गए बलिदान का प्रश्न यहूदी विश्वासियों के सम्मुख रखा। अशुद्ध भोजन से बचने के लिए पतरस और अन्य चेलों ने अन्यजातियों के साथ संगति से स्वयं को अलग कर लिया। इस मामले में पौलुस ने पतरस का विरोध किया परन्तु उसने यह स्वीकार किया कि अगर अन्ताकिया में यहूदी और अन्यजाति विश्वासियों को एक समान मेज़ की संगति में सहभागी होना हो तो यह आवश्यक है कि वे मूर्तियों को चढ़ाए हुए बलिदान में सहभागी होने से बचें।

पौलुस ने यहूदी और अन्यजाति मसीही लोगों (देखें प्रकाशितवाक्य 2:14, 20) के मध्य एकता के लिए यरूशलेम की कलीसिया के आदेश (देखें प्रेरितों के काम 15:30; 16:4) का समर्थन किया; परन्तु इस आदेश की अनुपस्थिति में बाज़ार से माँस खरीदने के बारे में प्रेरित किसी प्रकार की समस्या महसूस नहीं करता, फिर चाहे वह किसी अन्यजाति वेदी पर ही चढ़ाया हुआ क्यों न हो। कुरिन्थ में यहूदी और मसीही विश्वासियों के मध्य मेज़ की संगति के विषय में समस्या नहीं थी; परन्तु जो लोग विश्वास में कमज़ोर थे उन्हें ठोकर न लगे इस बात पर चिन्ता की जा रही थी।

अनुवादित शब्द "माँस-बाज़ार" (μάκελλον, *मकेलोन)* नया नियम में एक बार बस इसी स्थान में आया है, परन्तु यूनानी मूल लेखों में यह लगभग 400

वर्ष ईसा पूर्व के आरम्भ में पाया गया है। *मकेल्लम* शब्द का लातिनी संस्करण, कुरिन्थ में लेखक सड़क की पूर्व दिशा में माँस-बाज़ार के साथ मूल लेखों के छोटे-छोटे टुकड़ों के साथ सम्बन्ध में पाया गया है। सम्भव है कि माँस-बाज़ार में बिकने वाला अनेक माँस उन जानवरों का हो जो कि बलिदान के रुप में विभिन्न ईश्वरों को चढ़ाया हुआ हो।[14] माँस की अत्यधिक मात्रा जब आराधकों अथवा मन्दिर के अधिकारियों से खायी नहीं जाती थी तब वे उसे जनसाधारण के लिए बेच दिया करते थे। जब विश्वासी लोग माँस खरीद कर लाए तो वह भी मूर्तियों को चढ़ाया हुआ था, उसके मूल्य का कुछ भाग मन्दिर की मूर्तियों के सहयोग के लिए भेजा जाता था। पौलुस की दृष्टि में आर्थिक विषय कोई बड़ी बात नहीं थी। जहाँ कहीं से एक विश्वासी कुछ खरीदता है तो उस लाभ के धन का प्रयोग कहाँ किया जाता है इसके विषय में वह कुछ नहीं कह सकता।

जो माँस कहीं चढ़ाया गया था और अब माँस-बाज़ार में था वह परमेश्वर की रचना का भाग था और इसे बुरा नहीं कहा जा सकता। भौतिक वस्तुओं में कोई स्वाभाविक बुराई नहीं होती। माँस के किसी भाग के इतिहास की खोज करने से कोई जन अधिक पवित्र नहीं बन जाता। **क्योंकि पृथ्वी और उस की भरपूरी प्रभु की है** (10:26; देखें भजन संहिता 24:1)।

आयत 27. पौलुस तब दूसरे विषय की ओर मुड़ा। जनसाधारण बाज़ार से खरीदे गए माँस के विषय में जो सच था वह **किसी अन्यजाति** व्यक्ति के व्यक्तिगत घर में सम्भावित रुप से परोसे जाने वाले माँस के विषय में भी है। गुप्त में खाया जाने वाला माँस बेदाग था फिर चाहे वह किसी मूर्ति को चढ़ाया हुआ हो या नहीं। **जो कुछ तुम्हारे सामने रखा जाए वही खाओ**, ऐसा पौलुस ने संकेत देते हुए कहा, कि बिना किसी प्रकार का अपराध अथवा दोष महसूस करते हुए विवेक के कारण ऐसा किया जाए। सम्भव है कि उसमें यूनानी-भाषी संसार में वैराग्य कहलाने वाला भाग नहीं था। नैतिक रुप से निष्पक्ष भोजन अथवा गतिविधियों से अलगाव रखने के द्वारा कोई व्यक्ति पवित्र नहीं बना दिया जाता था।

मात्र माँस खाने से एक मसीही व्यक्ति किसी मूर्ति को आदर नहीं देता था। इस बात पर अत्यधिक रुप से पौलुस और उसके विरोधी सहमत थे क्योंकि मूर्तिपूजा मन और हृदय की एक क्रिया थी। उन्होंने इस विषय में उसी प्रकार अन्तर किया जैसा कि पौलुस ने बल दिया कि किसी मूर्ति की आराधना के लिए जनसाधारण विधियों में जब कोई व्यक्ति स्वयं को शामिल करता है तो एक बिन्दु पर वह मूर्तिपूजा और उस मूर्तिपूजा की सच्चाई दोनों एक ही साथ कर दी जाती हैं। अगर मूर्तिपूजा, माँस खाने का मात्र एक यान्त्रिक कार्य नहीं था तो इसके जनसाधारण प्रकटीकरण को भी अलग नहीं किया जा सकता। जब एक मसीही व्यक्ति ने किसी मूर्ति के मन्दिर में धार्मिक विधियों में सहभागिता दी तो वह किसी व्यक्तिगत घर में खाए जाने वाले माँस से बहुत आगे निकल गया।

पौलुस ने विश्वासियों से कहा कि **वे विवेक के कारण कुछ न पूछें** (διὰ τὴν συνείδησιν, *डिया टेन सुनीडेसिन*)। वह उपयुक्त रुप से अपने पाठकों से कह रहा था कि वे यह डर मन में न रखें कि उस माँस को खाने के कारण अन्यजाति

लोग उन्हें तुच्छ समझेंगे। जब तक कि एक विश्वासी को विशेष रुप से बताया न जाए तब तक किसी प्रकार से यह न सोचे कि वह किसी मूर्ति के सम्मुख चढ़ाए हुए माँस में से खा रहा है।

"विवेक" शब्द (συνείδησις, *सुनीडेसिस)* के विषय में दो बार प्रेरितों के काम में और उन्तीस बार पत्रियों में कहा गया है। 1 कुरिन्थियों 8 और 10 में यह शब्द आठ बार देखने को मिलता है जिसमें से पाँच बार यह 10:25-29 में आया है। यूनानी जगत में "विवेक," लज्जा और आदर के समान था, अर्थात अन्य लोगों की दृष्टि में स्वयं के सम्मान के विषय में स्वयं को जानने के साथ यह सम्बन्ध रखता था। "अच्छे विवेक" का अर्थ था कि अपने पड़ोसियों के सम्मुख बिना लज्जा के होना। प्रथम मसीही शताब्दी में "विवेक" शब्द एक विकसित होने वाला शब्द था और इस सन्दर्भ में पौलुस द्वारा इस शब्द का प्रयोग इस पत्र के विषय में एक बहुत ही कठिन व्याख्यात्मक प्रश्नों में से एक है।

आयत 28. किसी अन्यजाति व्यक्ति के घर में परोसे गए माँस को एक मसीही व्यक्ति के द्वारा खाने का विचार निरन्तर आगे चल रहा है। पौलुस ने अन्यजाति संस्कृति और मसीही समुदाय के बीच एक विरोधात्मक सम्बन्धों का अनुमान लगाया। हो सकता है कि एक अन्यजाति व्यक्ति किसी मसीही व्यक्ति को अपने साथ भोजन करने के लिए इसलिए बुलाए कि वह अपने अन्य अतिथियों का मनोरंजन करने के लिए उसे नीचा दिखा सके। पौलुस ने बताया कि **यदि** किसी मसीही व्यक्ति **से** कोई कहे, **"यह तो मूर्ति को बलि की हुई वस्तु है"** तो उसे क्या करना चाहिए। "कोई" शब्द का बहुत ही उपयुक्त अर्थ "अविश्वासी" व्यक्ति से है जिसने 10:27 में अपने रात्रि-भोज का अतिथि होने के लिए एक मसीही व्यक्ति को निमन्त्रण दिया।[15] उचित समय पर, अन्य अतिथियों की उपस्थिति में उसने इस मसीही व्यक्ति को सूचित किया, **"यह तो मूर्ति को बलि की हुई वस्तु है।"**[16] अपनी व्यक्तिगत ईमानदारी और जिस विश्वास का प्रतिनिधित्व उसने किया था उसकी ईमानदारी में बने रहते हुए, जब उसे सूचित किया गया कि वहाँ पर परोसा जाने वाला माँस किसी मूर्ति को आदर देने के लिए चढ़ाया हुआ माँस है, उस माँस के साथ वह मसीही व्यक्ति आगे नहीं बढ़ सकता।

इस प्रकार के दृश्य में मसीही व्यक्ति स्वयं को एक खराब स्थिति में महसूस करता है। जब उसे इस बात की जानकारी हो जाती है कि वह माँस किसी मूर्ति को समर्पित किया गया है तो उसे खाना का अर्थ है कि अन्य ईश्वर के प्रति एक मौन समर्थन रखना। जैसा कि पौलुस ने इस बात पर बल दिया कि मसीही व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने शुद्ध एकेश्वरवाद अर्थात परमेश्वर मात्र की आराधना करने के साथ समझौता न करें, तब वह फिर से "विवेक" को लाता है (10:28)। मसीही व्यक्ति "उसी बतानेवाले के कारण" उसमें से न खाए। विश्वासी इसे अस्वीकार करने में मेज़बान की चिन्ता का विषय क्यों बने?

आयत 29. पौलुस ने यह कहते हुए स्पष्ट किया (जैसा कि **मेरा मतलब** कहने के समय देखा जा सकता है) कि मसीही व्यक्ति उस अविश्वासी व्यक्ति के विवेक के कारण, जिसने उसे अपने साथ भोजन करने के लिए निमन्त्रण दिया और माँस

कहाँ से आया है इसके बारे में बताया उसके साथ न खाए।

पौलुस यह अनुमान लगा रहा था कि हो सकता है एक अविश्वासी व्यक्ति ने एक मसीही व्यक्ति को इसलिए निमन्त्रण दिया हो कि नए मसीही धर्म के विरुद्ध वह विरोध अथवा घृणा रखता हो। उसने यह कल्पना की कि उस निमन्त्रण का उद्देश्य हो सकता है कि उस मसीही व्यक्ति का जनसाधारण में तमाशा बनाया जाए। गैर-मसीही व्यक्ति का "विवेक" - जब वह जानता है कि अन्य लोग उसके प्रति आदर रखते हैं - उस समय और ऊँचा कर दिया जाएगा जब वह विश्वासी मूर्तियों को चढ़ाए हुए बलिदान में से जानते हुए भी खा लेता है।

जैसा कि एक सार्वजनिक दृश्य तैयार करने के द्वारा एक मसीही व्यक्ति पर दबाव डाला जाता था कि वह या तो उस भोज में से खाए या फिर उसमें से नहीं खाने के द्वारा स्वयं का अपमान करे, मेज़बान यह अपेक्षा रखता था कि मसीही व्यक्ति स्वयं के साथ समझौता करें और उस भोज में से खाना न छोड़ें। पौलुस ने मसीही व्यक्ति को यह सलाह दी कि वह इसके विपरीत कार्य करे: अपनी ईमानदारी पर बनें रहते हुए मसीही व्यक्ति उस भोज से स्वयं को दूर कर ले और मूर्तिपूजा से घृणा करने की बात को स्पष्ट कर दें। अगर मसीही व्यक्ति स्वयं को अपने विश्वास के प्रति ईमानदार व्यक्ति के रुप में प्रस्तुत कर देता है तो उस अशुद्ध भोज के विषय में सूचित करने वाला व्यक्ति निरादर पाता है। उस व्यक्ति के साथी गण उसकी क्रूर चालों को देख पाएँगे, उसका घमण्ड चूर कर दिया जाएगा और उसके "अन्तःकरण" पर चोट पड़ेगी।

अविश्वास (γάρ, *गर*, "के लिए") का प्रमाण देते हुए, पौलुस ने प्रथम दो प्रश्न किए: **भला, मेरी स्वतंत्रता दूसरे के विचार से क्यों परखी जाए?** फिर पौलुस अथवा अन्य मसीही व्यक्ति की स्वतन्त्रता, किसी ऐसे व्यक्ति के द्वारा क्यों बाधित हो कि उसके सम्मुख अच्छा विवेक प्रस्तुत करने के लिए उसके द्वारा किए जा रहे तिरस्कार को झेलना पड़े? प्रेरित ने मसीही लोगों से बलपूर्वक आग्रह किया कि वे अपने विश्वास में बनें रहें। एक मसीही व्यक्ति जब स्वयं की स्वतन्त्रता का मूल्य चुकाकर किसी कठोर मेज़बान की प्रतिष्ठा को बचाने का प्रयास करे तो यह विश्वास के साथ अस्वीकार्य समझौता है।

आयत 30. तब पौलुस ने पूछा, **यदि मैं धन्यवाद करके साझी होता हूँ, तो जिस पर मैं धन्यवाद करता हूँ उसके कारण मेरी बदनामी क्यों होती है? जबकि धन्यवाद के साथ उसमें भागी होने का अधिकार उसके पास है,** यह अधिकार उस अविश्वासी के द्वारा ले लिया गया है जिसने यह सूचित किया है कि उसे परोसे जाना वाला माँस मूर्ति को बलिदान किया गया है।

यहाँ पर इस परिस्थिति के विषय में पौलुस के द्वारा पूछे गए तर्कवादी प्रश्न कुछ विरोधाभास महसूस होते हैं। एक मसीही व्यक्ति की स्वतन्त्रता दूसरे के विचार से क्यों परखी जाए? एक मसीही व्यक्ति की आलोचना इसलिए क्यों की जाए कि वह परमेश्वर के प्रति आदर रखते हुए भोजन में सहभागी हो रहा है? इन प्रश्नों के उत्तर बिना किसी साक्ष्य के साथ स्पष्ट हैं। किसी मसीही व्यक्ति की स्वतन्त्रता किसी अन्य व्यक्ति के विवेक के द्वारा परखी नहीं जानी चाहिए, न ही

उस भोजन का आनन्द लेने के विषय में उस पर झूठा दोष लगाया जाना चाहिए जिसके लिए उसने धन्यवाद दिया है। फिर भी, जैसा कि पौलुस ने पूर्व में बताया, कि रात्रि-भोज का यह अतिथि, अपने विश्वास के साथ समझौता करने और अपनी स्वतन्त्रता को खो देने के बीच एक चुनाव का सामना कर रहा था। इस प्रकार की परिस्थिति में, एकमात्र परमेश्वर पर अपने भरोसे के प्रकटीकरण में उसे उस माँस को खाना अस्वीकार कर देना चाहिए। मसीही स्वतन्त्रता का अर्थ सब प्रकार के प्रतिबन्धों से मुक्त होना नहीं है।

"परमेश्वर की महिमा के लिये" (10:31-33)

31इसलिये तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो। 32तुम न यहूदियों, न यूनानियों, और न परमेश्वर की कलीसिया के लिये ठोकर के कारण बनो। 33जैसा मैं भी सब बातों में सब को प्रसन्न रखता हूँ, और अपना नहीं परन्तु बहुतों का लाभ ढूँढ़ता हूँ कि वे उद्धार पाएँ।

जब यूनानी-रोमी जगत में सुसमाचार फैल रहा था तब पौलुस ने यह महसूस किया कि मसीही लोग निरन्तर निकट जाँच के अन्तर्गत होने। झूठे दोष के द्वारा कलंक और विरोध उन्हें चारों ओर से घेर लेंगे। पौलुस की सेवकाई के पीछे के दशकों में आन्तरिक मतभेद और बाहरी दबाव के द्वारा कलीसिया को हिलाया जाएगा। दूसरी शताब्दी के अन्त के निकट कार्थेज से एक लेखक ने उन लोगों की शिकायत की जो कि मसीही व्यक्ति कहलाते थे परन्तु समाज पर आने वाले प्रत्येक संकट का कारण थे:

> अगर तिबरियास, शहर की दीवारों के समान ऊँची खड़ी हो जाए, अगर नील अपना जल खेतों तक न पहुँचाए, अगर आकाश से वर्षा न हो, अगर भूकम्प आ जाए, अगर अकाल अथवा महामारी आ जाए, फिर भी यही पुकार सुनने को मिलेगी, "किसी मसीही व्यक्ति से बचकर किसी शेर की ओर मुड़ जाना अधिक अच्छा है!"[17]

आज के विश्व में हम मसीही लोगों को चाहिए कि जितना हो सके उतना सुनाम पाएँ। जितना सम्भव हो हम अच्छे पड़ोसी बनें (देखें रोमियों 12:18) जैसा कि परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए हम जीवन जीते हैं।

आयत 31. 8:1 में आरम्भ किए गए "मूर्तियों को चढ़ाए गए भोज" के सम्बन्ध में दिए गए उपदेश को पौलुस दो अनिवार्य बातों के द्वारा संक्षिप्त करता है। ये एक स्पष्ट प्राथमिकता के साथ प्रकट होते हैं कि **सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो।** परमेश्वर की महिमा करने का उद्देश्य, दुष्टात्माओं (10:20, 21) को समर्पित मेज़ से ख़ाने और पीने के साथ मेल नहीं खाता था। आगे एक विश्वासी के लिए यह अनुचित था कि वह व्यक्तिगत अधिकारों पर बल दे और

कम प्रकाशित बातों पर अपनी प्रतिक्रियाओं से होने वाले प्रभाव को अनदेखा कर दे, फिर वे उस समय चाहे विश्वासी लोगों से व्यवहार कर रहे हों अथवा अविश्वासी लोगों से। नि:सन्देह, वे लोग जो कि मूर्तियों की सेवा करते हैं, अपने मन्दिरों में मसीही लोगों के द्वारा **खाने अथवा पीने** से मना करने पर क्रोधित हो जाएँगे। दोष को सदैव टाला नहीं जा सकता परन्तु मसीही लोगों को चाहिए कि वे स्वयं के और अविश्वासियों के बीच एक बाधा का निर्माण करने से बचें। मार्टिन लूथर के अनुसार धर्मशास्त्र की व्याख्या इस प्रकार थी, "कुछ ऐसा जो कि मसीह को लोगों तक पहुँचा दे अथवा लोगों के सम्मुख रख दे।" यह अर्थ, विश्वासियों के लिए पौलुस की अभिलाषा, "सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो," के समान है।

आयत 32. एक अवसर पर एक मसीही व्यक्ति से यह अपेक्षा की जा सकती है कि वह या तो परमेश्वर की महिमा के लिए कार्य करना अथवा **तुम न यहूदियों, न यूनानियों के लिए ठोकर के कारण बनना,** को चुन लें। इस प्रकार के मामले में परमेश्वर की महिमा पहले आनी चाहिए। यह निश्चित है कि कुछ कार्य जो कि एक मसीही व्यक्ति करता है उससे ठोकरें अवश्य आएँगी। पौलुस यह सलाह देता है कि जब ठोकर देने वाले कार्यों से बचा जाता है उस समय मसीही व्यक्ति "कोई ठोकर नहीं" देने पर अपना ध्यान केन्द्रित करे। प्रेरित ने आरम्भ में अपनी बात का मूल कारण बताया। मसीह के प्रति अपने समर्पण की सीमा के अन्तर्गत पौलुस यहूदियों के लिये यहूदी बना। व्यवस्थाहीन सा बना कि व्यवस्थाहीनों को खींच लाए। निर्बलों के लिये निर्बल सा बना। सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बना कि "किसी न किसी रीति से" कई एक का उद्धार कराए (9:20-23)।

आयत 33. चाहे प्रचारक को यह पसन्द हो या न हो और चाहे वह इसके लिए तैयार हो या नहीं परन्तु जो कुछ वह कहता है उसका मूल्यांकन उसी के अनुसार किया जाएगा जैसे कार्य वह करता है। पौलुस अपने लिए इस ज़िम्मेदारी को स्वीकार करने के लिए इच्छा रखता है। अध्याय 9 को पूरा देखने पर प्रेरित को हम उसके स्वयं का उदाहरण देखने के निवेदन को देखते हैं। उसने यह तर्क दिया कि मसीही लोगों की उच्च प्राथमिकता यह नहीं है कि वे स्वयं के अधिकारों पर बल दें। उसने कुरिन्थ के लोगों को यह कहने का साहस किया, "इसलिये मैं तुम से विनती करता हूँ कि मेरी सी चाल चलो" (4:16)। जो लोग सुसमाचार सुनते हैं उनके लिए यह उचित है कि अपने सिखाने वालों के जीवन में उस सुसमाचार की गम्भीरता को देखें। प्रत्येक प्रचारक का प्रभाव एक स्तर तक यह देखते हुए मापा जाएगा कि **उसने अपना नहीं परन्तु बहुतों का लाभ ढूँढा कि वे उद्धार पाएँ।**

अनुप्रयोग

उचित और लाभपूर्ण जीवन जीना

पौलुस ने कहा, "सब वस्तुएँ मेरे लिये उचित तो हैं, परन्तु सब लाभ की नहीं" (10:23)। कभी-कभी कुछ ऐसी चीज़ें जो कि कही गई हैं अथवा की गई हैं वे तकनीकी रुप से गलत नहीं हैं परन्तु हो सकता है कि किसी अवसर में वे उचित न हों। अपने पड़ोसी से प्रेम रखने के लिए मसीही व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि इस बात का ध्यान रखे कि जो वह कहने जा रहा है अथवा करने जा रहा है और कुछ अनुचित अपने मुँह से निकालने जा रहा है उसका प्रभाव क्या होगा।

अपनी बोली और व्यवहार के उचित होने के विषय में निर्णय लेने के लिए एक मसीही व्यक्ति की सहायता करने वाले अन्तर परिवर्तित होते रहते हैं। किसी छोटे समूह अथवा कुछ निकट मित्रों के बीच काम में लिए गए शब्द और व्यवहार सम्भव है कि उचित हों परन्तु एक बड़े समूह में अनुचित हों।

अन्य लोगों का ध्यान रखते हुए अपने अधिकारों से परहेज़ करने के लिए मसीही लोगों के साथ तर्क करते हुए पौलुस ने एक सामान्य सच्चाई के लिए निवेदन किया। वह सब कुछ जो कि स्वीकार्य हो, तकनीकी के आधार पर कुछ ऐसा हो जिसका बचाव किया जा सके परन्तु सम्भावित रुप से वह सुनने वालों की उन्नति का कारण न हो (10:23)। प्रेरित द्वारा व्यवस्थित किए गए सिद्धान्त मसीही लोगों को सिखाते हैं कि कुछ कार्यों और शब्दों को व्यक्तिगत व्यवस्था के अन्तर्गत बचा कर रखें। जिस समय स्वीकार्य और अनुचित के मध्य समाज की रेखा प्रायः स्थानान्तरित होती है, मसीही लोगों को चाहिए कि वे एक उच्च स्तर का अन्तर बनाए रखें और उचित व्यवहार का एक उदाहरण बनें।

छुड़ाए हुए लोगों के लिए आश्वासन

संयोजन, सन्तुलन, समय बनाए रखना और खिलाड़ी योग्यता दिखाने वाले रोमांचकारी प्रदर्शनों को देखने का आनन्द दर्शक लेते हैं। साथ ही खतरे का अनुभव हमें बन्दी बना लेता है। समय की गति में थोड़ी सी गलती से गम्भीर चोट लग सकती है अथवा जान भी जा सकती है। कुरिन्थ में मसीही लोगों के लिए पौलुस की चिन्ता यह थी कि कहीं ऐसा न हो कि वे एक गम्भीर समय में लापरवाह हो जाएँ और आत्मिक मृत्यु की हानि उठाएँ। खिलाड़ी के समान मसीही लोग एक सर्वव्यापी शत्रु का सामना करते हैं और वह है: संतोष। अपने चमकाए गए गुणों को अनदेखा करने में अगर एक बार भी लापरवाही की जाती है तो यह एक बड़ी विपत्ति के लिए पर्याप्त है। परीक्षा की ताकत को गम्भीरता से नहीं लेने के कारण अनेक मसीही लोग मृत्यु से भी अधिक बुरी स्थिति तक पहुँच गए।

क्षमा प्राप्ति का आश्वासन। पापों की क्षमा के लिए मसीह के सामर्थ पर भरोसा करने के द्वारा मसीही लोग सही कार्य करते हैं। हमने मसीह में बपतिस्मा पाया है और हमारे पापों के लिए हमने क्षमा पाई है, यह याद रखने के द्वारा आने

वाला आश्वासन मसीही जीवन में आनन्द जोड़ देता है। पौलुस के पुनः आश्वासन देने वाले शब्द उसके सब पत्रों में फैलाव के साथ देखे जा सकते हैं। उसने भाइयों के एक समूह को याद दिलाया, "और तुम उसी में भरपूर हो गए हो ... और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए और उसी में परमेश्वर की सामर्थ्य पर विश्वास करके, जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे" (कुलुस्सियों 2:10-12)। अन्य मसीही लोगों को प्रेरित ने इस प्रकार लिखा, "और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहन लिया है" (गलातियों 3:27)।

बपतिस्मा लेने के द्वारा जब एक पश्चात्तापी विश्वासी मसीह को पहनने के द्वारा प्रभु की आज्ञा मानता है तब परमेश्वर आत्मिक रुप से उसे परिवर्तित कर देता है। एक पापी, जो कि परमेश्वर से अलग हो चुका है और उसमें कोई आशा नहीं है वह बपतिस्मा के जल में जाता है और वहाँ पर मसीह के लहू के द्वारा शुद्ध कर दिया जाता है। जल से बाहर आने के साथ ही यह नया मसीही व्यक्ति परमेश्वर का बन जाता है। खोया हुआ व्यक्ति बचाया हुआ बन जाता है; मृत व्यक्ति जीवन को पहन लेता है। बपतिस्मा में एक व्यक्ति नया जन्म प्राप्त करता है। मसीह के साथ गाड़े जाने के साथ ही पुराना व्यक्तित्व मर जाता है और नया व्यक्तित्व अलग प्रकार से जीवन के साथ बाहर आता है। मसीही लोग मेमने के लहू के तले आ जाते हैं। उस समय हम आनन्द के साथ गीत गाते हैं, "शक्ति है, है अद्‌भुत शक्ति है ... यीशु के लहू में है।"[18] बपतिस्मा एक निरन्तर पुनः आश्वासन उपलब्ध करवाता है कि एक विश्वासी व्यक्ति, छुड़ाए हुए और क्षमा किए हुए लोगों का एक भाग है।

यह सब पौलुस भी जानता था और कुरिन्थ के मसीही लोग भी जानते थे। फिर भी, पौलुस यह बताता है कि बपतिस्मा में मसीह के साथ एक हो जाने के पुनः आश्वासन को याद रखने में एक शक्तिशाली खतरा भी है और वह यह है कि: संतोष से धमकी प्राप्त होती है। कुछ लोग जो कि परमेश्वर के द्वारा चुने गए और छुड़ाए गए वे अपने पापों के पुराने जीवन की ओर मुड़ गए और परमेश्वर के अनुग्रह से अलग हो गए। जब इस्राएल ने मिस्र देश छोड़ा तब एक अर्थ में उनका बपतिस्मा हुआ। जब वे समुद्र से होकर गए, जबकि बादल उनके ऊपर थे तब वे परमेश्वर की सुरक्षा में लिपटे हुए थे। परमेश्वर ने उन्हें छुड़ाया था; उसने उनको उसी प्रकार खरीदा था जिस प्रकार उसने मसीह के लहू के द्वारा कुरिन्थ के मसीही लोगों को खरीदा। जंगल में इस्राएल ने पाप किया और परमेश्वर को क्रोध करने के लिए उकसाया। प्रेरित की प्रार्थना यह थी कि कुरिन्थ के लोग इस प्रकार न करें।

प्रभु की मेज़ का आश्वासन। पौलुस ने कुरिन्थ के लोगों को जो लिखा वह प्रत्येक समय में और प्रत्येक स्थान में, छुड़ाए हुए लोगों के साथ सम्बन्ध रखता है। प्रभु भोज में शामिल होना मात्र एक यादगार नहीं है परन्तु यह एक आश्वासन भी है। आत्मिक रोटी में से खाने और पीने के द्वारा मसीही लोग एक-दूसरे के साथ और मसीह के साथ संगति करते हैं (10:16)। सिखाने के लिए इतिहास का

निरन्तर प्रयोग करते हुए पौलुस ने कुरिन्थ के लोगों को यह याद दिलाया कि परमेश्वर ने इस्राएलियों को जंगल में आत्मिक भोजन और आत्मिक जल दिया। यह प्रभु भोज के समान नहीं है परन्तु मूल अर्थ में यह अधिक अलग भी नहीं है। प्रेरित ने लिखा, "और सब ने एक ही आत्मिक भोजन किया और सब ने एक ही आत्मिक जल पीया,क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे जो उनके साथ-साथ चलती थी, और वह चट्टान मसीह था" (10:3, 4)। पौलुस जानता था कि "मसीह में" होने के लिए बपतिस्मा और प्रभु भोज से भी अधिक बातें शामिल हैं। आत्मिक सामर्थ के लिए जिस प्रकार ये चिन्ह महत्वपूर्ण हैं, ये भक्ति के लिए बहुतायत की आशिष हैं परन्तु आत्मिक सामर्थ के लिए ये गारन्टी नहीं हैं।

समाप्ति नोट्स

[1]कार्ल हॉलैडे, *द फ़र्स्ट लैटर ऑफ़ पॉल टू कोरिन्थियन्स*, द लिविंग वर्ड कमेंट्री (अबिलीन, टेक्स.: अबिलीन क्रिस्चियन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1979), 123. [2]डेविड ई. गारलैंड, *1 कोरिन्थियन्स*, बेकर एक्सेजेटिकल कमेंट्री ऑन न्यू टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर अकैडमिक, 2003), 456-57. [3]बेन विदरिंगटन तृतीय ने इस अध्ययन की व्याख्या इस प्रकार की: "इस अध्ययन के पीछे का विचार यह है कि क्योंकि परमेश्वर का चरित्र कभी नहीं बदलता और वह इतिहास के युगों में एक समान कार्य करता है और, शायद अधिक महत्वपूर्ण तौर पर, ऐसे व्यक्ति और घटनाएँ प्रदान करता है जो बाद में आने वाले व्यक्तियों और उद्धार की घटनाओं के इतिहास का पूर्वाभास कराती हैं" (बेन विदरिंगटन तृतीय, *कनफ्लिक्ट एंड कम्युनिटी इन कोरिन्थ: अ सोशियो-रेटोरिकल कमेन्ट्री ऑन 1 एंड 2 कोरिन्थियन्स* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: डब्ल्यू एम्. बी ईरडमंस पब्लिशिंग को. 1995], 217)। [4]इस अंक में कुछ समस्या है। गिनती 25:9 में अभिलेख यह कहता है कि 24,000 नाश हो गए। उस अंक और जो अंक 1 कुरिन्थियों 10:8 में है उसका मेल करने के असंख्य प्रयास हो चुके हैं, परन्तु इनमें से कोई भी अधिक संतोषप्रद नहीं रहा है। जो लोग बालपोर में नाश हुए थे उनकी यथार्थ संख्या पौलुस के बिंदु के लिए सारहीन है। एक इंजिनीयर एक हज़ार का एक इंच सावधानी से माप सकता है, लेकिन इस तरह की सटीकता अधिकतर समय अनावश्यक है। दूरियाँ अक्सर अनुमानित मीलों या किलोमीटरों में दी जाती हैं। हम इस बात पर आश्वस्त हो सकते हैं कि बाइबल एकदम सटीक है, चाहे बालपोर में मरने वालों की कुल संख्या 23,000 थी या 24,000। [5]रिचर्ड ई. ओस्टर, जूनियर, *1 कोरिन्थियन्स*, द कॉलेज प्रेस NIV कमेंट्री (जोप्लिन, एम् ओ.: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग को. 1995), 236-237। [6]सिराक 33:1 (NAB)। सिराक की अप्रमाणिक पुस्तक "इक्लिसीएस्टिकस" भी कहलाती है। [7]देखें रोमियो 11:25; 12:16; 2 कुरिन्थियों 11:19. यही यूनानी शब्द 1 कुरिन्थियों 4:10 में "बुद्धिमान" के रुप में अनुवादित किया गया है। [8]गार्लैंड, 478-79. [9]बरुक 4:7 (NAB)। [10]गार्लैंड, 480.

[11]वेयन ए. मीक्स, *द फ़र्स्ट अर्बन क्रिश्चियन्स: द सोशियल वर्ल्ड ऑफ़ द अपोस्ल पौल*, 2अंड एड. (न्यु हेवन, कोन्न.: याले युनिवर्सिटी प्रेस, 2003), 98. [12]पौलुस ने डेढ़ वर्ष उस शहर में बिताया (प्रेरितों के काम 18:11)। यरुशलेम, अन्ताकिया से होते हुए इफ़िसुस (प्रेरितों के काम 18:22) और एशिया के "ऊपर के देशों" (प्रेरितों के काम 19:1) की ओर लौटने के लिए उसे और डेढ़ वर्ष से दो वर्षों की आवश्यकता रही होगी। इफ़िसुस में पहुँचने के बाद कुरिन्थ की परिस्थितियों के बारे में जानने में उसे कुछ समय लगा होगा। उसने उन्हें 1 कुरिन्थियों (देखें 1 कुरिन्थियों 5:11) लिखने से पहले एक पत्र लिखा। [13]अनुवाद किया गया शब्द "खोजना" (ζητέω, *ज़ेटेओ)* एक मज़बूत शब्द है जो कि सम्भावित रुप से वादविवाद और बहस को शामिल करता है। [14]जेरोम मर्फ़ी-ओ'कोन्नोर, *सेन्ट पौल्स कोरिन्थ: टेक्स्ट्स ऐन्ड आर्किओलॉजी*, 3ई रेवलेशन एन्ड ऐक्स्प. एड.

(कॉलेजवाइल, मिन्न.: लिटर्जिकल प्रेस, 2002), 30. साक्ष्य की जाँच करने के बाद गार्लैंड ने यह बनाए रखा कि यूनानी माँस-बाज़ार में "नहीं बेची जाने वाली वस्तुएँ भी मूर्तिपूजा की रीतियों से अपवित्र कर दी गई थी" (गार्लैंड, 491-92)। [15]अन्य टीकाकार, जैसे कि आर. सी. एच. लेन्सी, ने तर्क दिया कि "कोई भी" अन्य भाई के विषय में बताता है। अगर यह विचार सही होना चाहिए तो कमज़ोर/मज़बूत भाई की परिस्थिति पर ध्यान दिया जाना चाहिए. (आर. सी. एच. लेन्सी, *द इन्टरप्रिटेशन ऑफ़ सेन्ट पौल्स ऐन्ड सेकन्ड एपिसल टू द कोरिन्थियन्स* [मिनियापोलिस: औग्ज़बर्ग पब्लिशिंग हाऊस, 1937], 421.) [16]यहाँ εἰδωλόθυτον (*इडोलोथुटोन*; 10:19) से ἱερόθυτον (*हायरोथुटोन*; 10:28) की ओर पौलुस के मुद्राव के आधार पर व्याख्यात्मक निष्कर्ष निकालना एक गलती होगी। ऐसा लगता है कि उसने इन शब्दों का प्रयोग पर्यायवाची के रुप में किया हो, जबकि हो सकता है कि पहला शब्द शिक्षित अन्यजाति लोगों के द्वारा अपमान के सूचक के रुप में अनुवादित किया गया हो। [17]तरतूलियन *अपोलॉजी* 40.2. [18]लेविस ई. जोन्स, "देयर इज़ पावर इन द ब्लड," *सोंग्स ऑफ़ फ़ेथ ऐन्ड प्रेज़*, कोम्प. ऐन्ड एड. अल्टन एच. होवर्ड (वेस्ट मोनरो, ला.: होवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)।